राज कॉमिक्स विशेषांक

मूल्य 20.00 संख्या 113

महायुद्ध

(एक राइटिंग पैड मुफ्त)

1998

भौकाल

महायुद्ध

• लेखक: संजय गुप्ता
संपादक: मनीष गुप्ता
चित्र: कदम स्टुडियो

विकट पर्वत जिसकी शृंखलाएं, सुरसा के मुंह की तरह दूर-दूर तक फैली हैं अभिमान से अपना माथा ऊंचा किये नभ को छूने को तत्पर नजर आती हैं जिसकी चोटियां और--

पाताल तक पहुंची हुई हैं जिसकी गहराइयां।

अद्भुत और अनोखी-

न इस विकट पर्वत पर मस्तिष्क को कुंद ने और आंखों को आश्चर्य से फाड़ देने अगर कुछ है तो वह है यह चट्टान--

विकट पर्वत की ही तरह आडिग।

परन्तु आज ना मात्र विकट पर्वत ही अपितु इस चट्टान का अस्तित्व भी हिलने लगा--

दरारें पड़ने से चटकने लगी वह चट्टान...

...एक क्षण बाद ही खील-खील होकर बिखर गई...

...और फिर...

...सामने आया वह पाप का अवतार...

... रावण का वंशज--

छल और कपट का महा ज्ञाता...

...महारावण--

कंपन उत्पन्न करके तूने महारावण की साधना में विघ्न डाला है वसुधरे...

... रुक जा।

क्रोध से चिंघाड़ते हुए महारावण ने अपना एक हाथ धरा के सीने पर रख दिया--

पलक-झपकते ही पृथ्वी का कंपन शान्त हो गया-

इसी के साथ महारावण के कंठ से गूंजा चट्टानों के भी सीने में सिहरन पैदा करने वाला स्वर--

अच्छा किया वसुन्धरे कि तूने आदेश मानकर अपना कंपन रोक लिया।...

...अन्यथा तेरी गति को ही रोक देता महारावण।

इस कंपन के पीछे अवश्य ही कोई कारण छिपा हुआ है?..

... और वह कारण क्या है यह जानने के लिए मुझे कलंकिनी को बुलाना होगा।

हमें तुम्हारी आवश्यकता है। पृथ्वी, आकाश, पाताल जहां भी हो अतिशीघ्र हमारे सामने प्रकट हो...

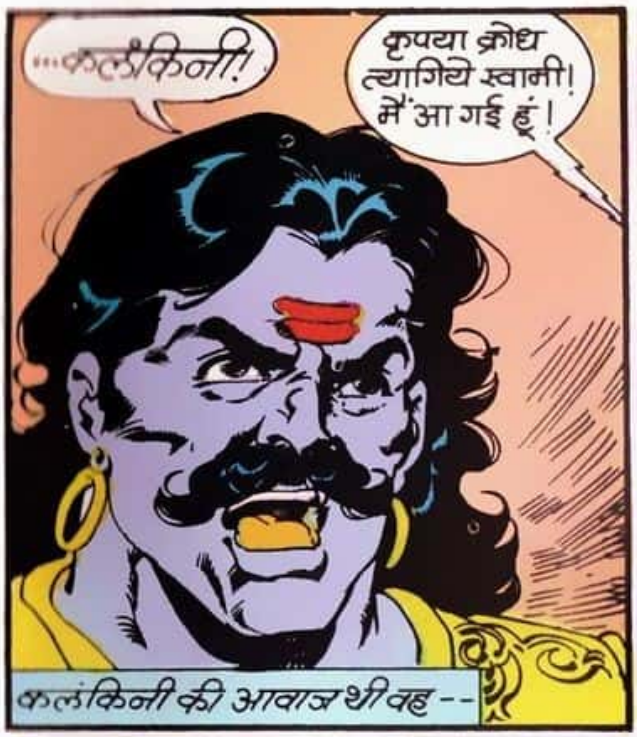
...कलंकिनी!
कृपया क्रोध त्यागिये स्वामी! मैं आ गई हूं!
कलंकिनी की आवाज थी वह --

जिसे सुनकर महारावण पलटा तो हतप्रभ रह गया--
अशरीरी!
तुम इस रूप में कलंकिनी? तुम्हारे शरीर को क्या हुआ?
वह समाप्त हो चुका है स्वामी! मैं मृत्यु को प्राप्त हो चुकी हूं।

आश्चर्य का तेज झटका लगा उस पाप के अवतार को-
शक्तिशाली कलंकिनी समाप्त हो चुकी है जो अपनी बहन डंकिनी और कपालिका के साथ रुधिर यज्ञ करके समस्त कलंका और राक्षस जाति को अमर करने में व्यस्त थी|...
... इससे पहले हमारा कहर सारे विश्व पर टूट पड़े हमें इसका कारण बताओ अशरीरी!

इसका कारण मोकाल नामक वह मनुष्य है, जो देवताओं से दिव्यास्त्र प्राप्त कर अपने मित्रों और हनुमान के सहयोग से पृथ्वी से राक्षस जाति का समूल नाश करने निकला है...

... और अपने इस अभियान में अभी तक वह सफल भी हुआ है क्योंकि अब तक वह...
कालकूट...
...कालभुजंग...
...मृत्युजीत...
...डंकिनी...
...कपालिका...
और मेरे पुत्र कालबिन्दु के साथ-साथ...
...मुझे भी समाप्त करने में सफल हो चुका है--

सभी कुछ सुनकर स्तब्ध रह गया महाप्रतापी--
ओह! इतनी बड़ी-बड़ी महाशक्तियों का नाश हो गया और तुमने हमें उसकी खबर भी ना होने दी।...
... एक का भी मानसिक सम्पर्क हमसे ना हुआ।...
...क्यों? ऐसा क्यों हुआ कलंकिनी...
...क्यों?
क्षमा करें कलंकापति! आपके और उन महाशक्तियों के मानसिक सम्पर्क के बीच मैंने ही बाधा उत्पन्न की थी क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि आपकी साधना में विघ्न पहुंचे और आप ब्रह्माण्ड विजयी सिद्धि को प्राप्त करने से वंचित रह जायें।
मुझे अत्यंत दुख है कि आपको हमारी असफलता के कारण शोक हुआ।
अचानक महारावण के कंठ से निकली हुंकार से थर्रा गया सम्पूर्ण विकट पर्वत का अस्तित्व--
नहीं। हमारे शरीर में शोक की नहीं प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही है। शोक दुर्बलों की निशानी है बलशाली तो प्रतिशोध लिया करते हैं।...
... इसका भी प्रतिशोध लिया जायेगा... ऐसा प्रतिशोध जिसका कहर मात्र भोकाल पर ही नहीं...
... समस्त पृथ्वीवासियों पर टूटेगा।
और इस प्रतिशोध को पूरा करने में मेरी सहायता करेंगे मेरे कपट गुरू तुषाराचार्य।
कपटगुरू तुषाराचार्य प्रकट हो।
और प्रकट हुए कपटकला के माहिर कपटगुरू तुषाराचार्य-
कैसे याद किया वत्स? मौत पर भी संकट बन जाने वाले महारावण पर क्या कोई संकट आन पड़ा है?

Ankur's UPload

संकट के लिए नहीं अपितु तुम्हारी कपट विद्या को परखने के लिए तुम्हारे इस शिष्य ने तुम्हें याद किया है कपटगुरू...

...परन्तु हमारी मानसिक सिद्धि बता रही है तुम्हारी तो मृत्यु हो चुकी थी...

... फिर तुम इस जीवित रूप में कैसे ?

उत्तर में उस कपटी के अधरों पर खेल गई वह कपट से भरी मुस्कान--

सारे विश्व के साथ-साथ तुम जैसा महाशक्तिशाली हमें कपट गुरू इसीलिये तो कहता है।

जब भी हमारा या हमारे किसी शिष्य का पासा युद्ध में कमजोर पड़ता है तो हम कपट से छद्म मृत्यु चुन लेते हैं।...

... इस तरह सामने वाला शत्रु असावधान हो जाता है और फिर हम उचित अवसर आने पर अपने उस शत्रु को समाप्त कर डालते हैं।...

... ऐसी ही छद्म मृत्यु का प्रयोग मैंने अपने पिछले युद्ध में किया था। उसमें तुरीन की मृत्यु का प्रतिशोध लेने निकले भोकाल के साथियों का पलड़ा भारी देखकर मैंने अपने और हिमराज के लिए छद्म मृत्यु चुन ली थी-★

सभी ने हमें मरा समझ लिया...

★ यह जानने के लिए पढ़ें – 'आखिरी निशानी'

... जबकि वास्तविकता में मात्र में ही नहीं तुम्हारा भाई हिमराज भी जीवित है।...

...वह इस समय कपट सिद्धि से यदम मृत्यु प्राप्त करके छः मास की शीतनिद्रा में हिम पर्वत पर जाकर सो गया है।

उसे उस निद्रा से जगाओ कपट गुरू! मुझे तुम्हारे साथ-साथ उसकी भी आवश्यकता है।

छः माह से पहले हिमराज को जगाना नामुमकिन है कलंकेश्वर और ऐसा करना वैसे भी उसके हित में नहीं होगा। क्योंकि उसे शाप है कि अगर उसे छः माह से पहले जगाया गया तो उसकी मृत्यु निश्चित है।

मृत्यु! हा... हा... हा!...

...किस मृत्यु की बात कर रहे हो कपटगुरू! वह तो महारावण के चरणों की दासी है। वह हमारे प्रियभ्राता हिमराज का कुछ नहीं बिगाड़ सकती इसलिए...

...हम तुम्हें आदेश देते हैं जाओ और हिमराज को जगाओ!

ब्रह्मनाद की सबसे बलशाली शक्ति का आदेश था वह...

...जिसे टालने का साहस ना कर सका तुषाराचार्य और तुरन्त ही हिमराज को जगाने निकल पड़ा--

साधना में लीन होने के कारण भोकाल और उसके साथियों को समाप्त करने का जो कार्य इस समय हम नहीं कर सकते उसे हमारा भ्राता हिमराज करेगा।...

महारावण जैसी महाशक्ति जिसे समाप्त करने के लिए चिन्तित हो उठी थी...

...उस भोकाल का मस्तिष्क इस समय अभिमान के शिखर को छू रहा था--
हा... हा... हा...। तो तुम यह कहना चाहते हो भीलराज कि अगर तुम और तुम्हारी भील सेना मेरे साथ नहीं होती तो मैं मृत्युजीत, मत्स्यकेतु, डंकिनी, कपालिका और कलंकिनी पर कदापि विजय नहीं पा सकता था। हा... हा...
हां भोकाल ! यही कहना चाहता हूं मैं क्योंकि युद्ध कोई भी अकेला महाबली नहीं जीत सकता अगर उसके साथ सेना और रणनीति बनाने वाले ना हों।...
...उसके साथ कंधे से कंधा मिलाने वाले ना हो, उसके लिए अपनी जान देने वाले ना हों।
तुम एकदम मूर्ख हो भीलराज, जो ऐसी बात कर रहे हो, जबकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि अगर मेरा साहस, मेरा युद्ध कौशल और मेरे दिव्यास्त्रों ने अपना पराक्रम ना दिखाया होता तो...
... ना इतनी बड़ी- बड़ी महाशक्तियां मृत्यु को प्राप्त होती...
...और ना तुम और तुम्हारी भील सेना इस आनन्दमयी क्षण का आनन्द ले रही होती...
...भीलराज ! तुम और तुम्हारे भील साथी मेरे जैसे महाबली के संरक्षण में युद्ध करने के सिवा कुछ नहीं कर सकते।
भोकाल के इस व्यवहार ने...
...सभी को भौचक्का कर दिया था--
भीलराज और उसके भील साथियों का उपकार मानने की जगह भोकाल उन्हें अपमानित कर रहा है।...
... क्या हुआ है उसे ?
जरूर कोई बात है क्योंकि घमंड से भरे ऐसे शब्द भोकाल के मुख से मैंने कभी नहीं सुने।
भोकाल के प्रति उठे वे प्रश्न हर एक के मस्तिष्क में थे—

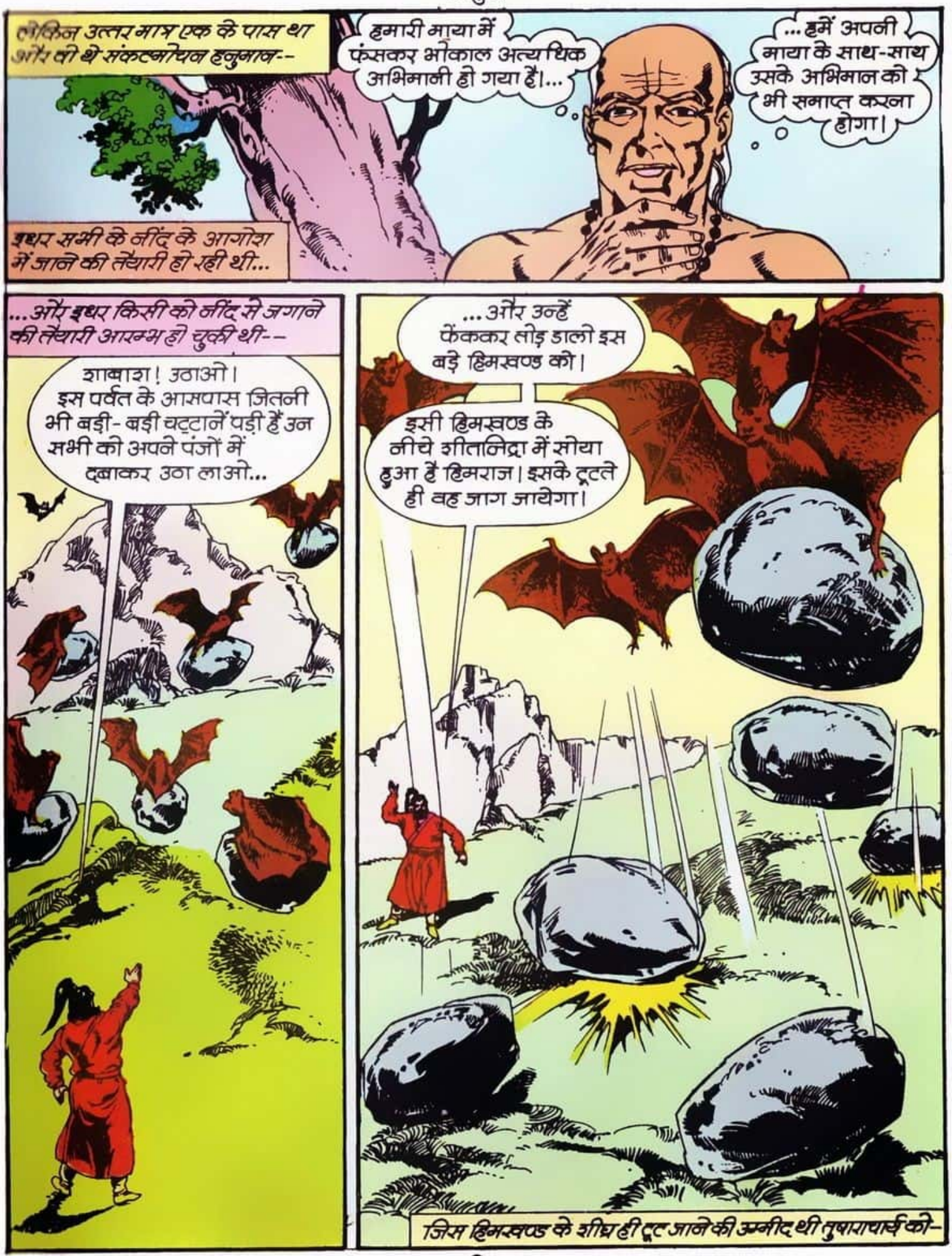
लेकिन उत्तर मात्र एक के पास था और वो थे संकटमोचन हनुमान--
हमारी माया में फंसकर भोकाल अत्यधिक अभिमानी हो गया है।...
...हमें अपनी माया के साथ-साथ उसके अभिमान को भी समाप्त करना होगा।
इधर सभी के नींद के आगोश में जाने की तैयारी हो रही थी...
...और इधर किसी को नींद से जगाने की तैयारी आरम्भ हो चुकी थी--
शाबाश! उठाओ। इस पर्वत के आसपास जितनी भी बड़ी- बड़ी चट्टानें पड़ी हैं उन सभी को अपने पंजों में दबाकर उठा लाओ...
...और उन्हें फेंककर तोड़ डालो इस बड़े हिमखण्ड को।
इसी हिमखण्ड के नीचे शीतनिद्रा में सोया हुआ है हिमराज। इसके टूटते ही वह जाग जायेगा।
जिस हिमखण्ड के शीघ्र ही टूट जाने की उम्मीद थी तुषाराचार्य को-

वह काफी देर तक टस से मस नहीं हुआ--

ओह! सभी घमगादड़ थककर चूर हो चुके हैं और हिमस्खण्ड का बाल भी बांका नहीं हुआ।

अब मैं पृथ्वी के केन्द्र को फोड़कर उसमें से दहकता लावा निकालूंगा...

इस बार तुषाराचार्य के हाथों से निकली वह शक्ति धरा के सीने को चीरती चली गई--

एक पल बाद ही वहां फूट पड़ा वह ज्वालामुखी...

...जिसका दहकता लावा हिमस्खण्ड को नहलाता चला गया-

बहुत देर तक चलती रही वह क्रिया--

लेकिन हिमस्खण्ड को जरा भी आंच नहीं आई--

ओह! भला पृथ्वी के केन्द्र से निकले दहकते लावे से ज्यादा गर्म और क्या होगा...

...क्या अब मुझे हिमराज को जगाने का विचार त्याग देना चाहिए।

नहीं, अगर सूर्य अपना संपूर्ण ताप कुछ क्षणों के लिए हिमखण्ड पर केन्द्रित कर दे तो बात बन सकती है और एक ही प्राणी सूर्य को विवश कर सकता है...

...महारावण!

बोलो कपटगुरू तुषाराचार्य! मैं तुम्हारे मानसिक स्वरों को भली भांति समझ रहा हूं।

तुषाराचार्य की गूंजती आवाज ने पलभर में ही महारावण को सब कुछ बता दिया--

जिसे सुनकर मंद-मंद मुस्कराता साधनारत महारावण और फिर उसके मस्तिष्क से गूंज उठे ये स्वर--

महारावण को तेरी आवश्यकता है। मैं तुम्हें आदेश देता हूं जाओ...

...जाकर हिमपर्वत पर शीतनिद्रा में सोये हमारे भाई हिमराज को अपने ताप से जगा दो।...

...जाओ सूर्य आदेश मानो अन्यथा तुम्हें सदा के लिये ठंडा कर देगा महारावण।

मैं प्रचंडास्त्र धारक महारावण का आदेश मानने के लिए विवश हूं, इसलिए...

..."मुझे अपने समस्त ताप को उसके बताये स्थान पर केन्द्रित करना ही होगा--"

हिमखण्ड पर तेजी से एकत्रित होने लगा सूर्य का ताप...

...जिसका परिणाम तुरन्त ही सामने आया

हिमखण्ड तेजी से वाष्प बनकर उड़ने लगा।

जल्द ही सूर्य के ताप ने हिमराज तक पहुंचकर उसे तिलमिलाकर उठने के लिए विवश कर दिया।...

...और फिर एक क्षण बाद ही...

... ज्वालामुखी की भांति गरज कर उठा वह हिम का राजा...

अ ऽ ऽ ऽ

...अगले ही क्षण जिसके क्रोध का कहर सूर्य पर टूटा--

तेरे ताप ने मेरी शीतनिद्रा को समय से पहले ही भंग कर देने का अपराध किया है सूर्य ! हिमराज तुझे इसका दण्ड देगा...

... तेरी एक भी किरण को पृथ्वी तक नहीं पहुंचने देगा हिमराज।

शांत हिमराज। शांत! जिस अपराध का दण्ड तुम सूर्य को देने जा रहे हो वह उसने स्वयं नहीं किया...

...अपितु तुम्हारे बड़े भाई महारावण ने सूर्य को विवश किया है।
हां, हिमराज! अपनी हिमज्वाला को शान्त करो और जो हम कहना चाहते हैं उसे ध्यान से सुनो।
गुरुदेव!
तुरन्त ही शान्त हुआ हिमराज और तब तुषाराचार्य ने उसे समझाना आरम्भ किया-

सब कुछ सुनने के बाद ऐसे सुखी हुआ हिमराज जैसे बच्चा खिलौना पाकर सुखी होता है--
अहो भाग्य मेरे जो भाई महारावण जैसी महाशक्ति ने मुझे उस भोकाल को समाप्त करने का दायित्व सौंपा है जो मेरा सबसे बड़ा शत्रु है।...
...यह दायित्व पूरा करेगा हिमराज...
...अपनी हिमशक्तियों से भोकाल को भयानक मृत्यु देकर।

इधर भोकाल के अहंकार की ज्वाला भीलों पर बरस रही थी--
हा... हा... हा! यह कोई युद्ध प्रशिक्षण है? मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे कुछ बालक क्रीड़ा कर रहे हों। हा... हा... हा!

युद्ध कैसे लड़ा जाता है, तलवार कैसे चलाई जाती है? शत्रुओं के धक्के कैसे छुड़ाये जाते हैं? यह मुझ जैसे महाबली से सीखो।
महाबली, इतना अभिमान ठीक नहीं। क्योंकि जहां अभिमान सिर चढ़कर बोलने लगता है वहां निस्तेज होकर रह जाती है तलवार की धार।

भीलराज! महाबली के हाथ में थमी तलवार की धार तुम अपने साथियों के साथ मेरा मुकाबला करके परख सकते हो।
मैं तुमसे व्यर्थ उलझना नहीं चाहता था महाबली!...

... लेकिन अब तुम्हें यह समझाने का समय आ गया है कि अभिमानी की तलवार ज्यादा तेज होती है या स्वाभिमानी की।

भीलराज ने पास ही खड़े अपने साथी से झपट ली वह तलवार...

... और आ खड़ा हुआ भोकाल के सामने--

हा... हा... हा!.. तुम अकेले मुझसे युद्ध लड़ोगे भीलराज!

हां महाबली! क्योंकि वीरता की परख तभी होती है जब मुकाबला बराबरी का हो। अगर तुम अपनी तलवार से मेरे शरीर पर खरोंच भी डाल दी तो मेरे साथ-साथ मेरे सभी साथी भी तुम्हारी दासता स्वीकार कर लेंगे।

अगले ही पल भीलराज ने भोकाल पर वार करके वह लड़ाई शुरू कर दी...

... जिसे दस साथी देख रहे थे अतिक्रूर, धनुषा और भील लड़के...

ठनाक

Ankur's UPload

... जो पल-प्रतीपल भीषण...

... और भीषण होती चली जा रही थी--

लेकिन इसके बावजूद भी ना तो भोकाल की वार करने की फुर्ती में कमी आई थी...

ठनाक

और ना ही भीलराज की वार रोकने की क्षमता का ह्रास हुआ था...

... ना भोकाल थकता नजर आया था--

और ना भीलराज के कदम लड़खड़ाये थे--

दोनों अटल थे-

लेकिन उनके साथ-साथ यह बात भी अटल थी कि इस लड़ाई का निर्णय होना ही था...

... यह द्वंद्व रुकना ही था...

... और कुछ देर बाद रुका भी तब, जब भोकाल के तेज वार से भीलराज के हाथों से तलवार छूट गई--

ओह!

टनाक

और उसके हाथ रुक गये--

देखा भीलराज! तुम्हारे हाथों से तलवार छुड़ाकर मैंने सिद्ध कर दिया ना कि मुझ जैसा तलवार का धनी विश्व में कोई दूसरा नहीं...

... मैं तुम्हें एक अवसर और देता हूं। अपनी तलवार उठाओ और वार करो।

सच्चा योद्धा एक बार अपने हाथ से छूटी तलवार को दुबारा नहीं उठाता महाबली, लेकिन तुमने अपनी तलवार को क्यों रोक दिया? अभी समाप्त कहां हुआ है मुकाबला...

... अभी मेरे शरीर पर खरोंच डालने में सफल कहां हुए हो तुम?

चलाओ तलवार, डालो मेरे शरीर पर खरोंच।

भोकाल निहत्थे पर वार नहीं करता भीलराज।

निहत्था वो होता है जिसके हाथ कांप जाएं, अंग कांपने लगें और गर्दन हार के अपमान से झुक जाए...

... लेकिन भीलराज की भुजाओं में शक्ति व पांवों में युद्ध विजय का सामर्थ्य है और तुम्हारी तलवार का सामना करने के लिए मेरी गर्दन तनी हुई है।

तुम्हारी गर्दन झुकेगी भीलराज, और धरा पर कटी, तुम्हारी भुजाओं व पांवों को तड़पता देखेगी।

कहानी 19 वें पृष्ठ से जारी

मैंने तुम्हारे इस अभिमान को तोड़ना है कि तुम्हारी तलवार मेरे शरीर को काट सकती है...

अद्भुत तरीके से भीलराज ने तलवार को अपने दोनों हाथों के बीच रोक लिया...

... और फिर--

असाधारण चपलता का परिचय देते हुए भीलराज ने ना मात्र भोकाल के हाथ से उसकी तलवार छुड़ाई...

... अपितु उसे उठाकर दूर भी फेंक दिया-

भड़ाक

फिर भीलराज ने भोकाल को संभलने का कोई भी अवसर नहीं दिया--

विद्युत की गति से वह उस पर वार करता चला गया...

... और वे वार तब तक ना रुके...

...जब तक भोकाल की चेतना लुप्त जा हो गई--

कुछ क्षणों के बाद जब भोकाल की चेतना वापस लौटी तो--

ओह,ये क्या? मुझ जैसे महाबली को एक साधारण भील ने पराजित कर दिया!

ओफ्फ! मैं किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहा!

ग्लानिता से भरता चला गया भोकाल का रोम-रोम!

दूसरे ही क्षण उसने झपटकर उठाली वह तलवार...

...और अगले ही क्षण-

इस पराजय के पश्चात मुझे जीने का कोई अधिकार नहीं! आह!

एक झटके से भोकाल ने तलवार को अपने सीने में घुसेड़ लिया

इसी के साथ भोकाल के प्राण-पखेरू उड़ गये-

उसका शरीर निढाल होकर जमीन पर आ गिरा

और आत्मा आकाश की गहराई में लुप्त होने के लिए चल दी-

लेकिन भोकाल की वह आत्मा लुप्त हो पाती...

...उससे पहले ही उसे एक आवाज़ने रोक लिया--

रुक जाओ! समय से पूर्व अपने शरीर को छोड़कर कहां जा रहे हो?...

... अभी पृथ्वी को तुम्हारी आवश्यकता है मोकाल!

बजरंगी भगवन् आप! आप तो जानते ही हैं कि एक योद्धा की हार उसकी मृत्यु के समान ही होती है। मैं भी हार गया था और वो भी एक साधारण भील से...

...इसलिए मैंने अपनी मृत्यु आप चुन ली!

एक कायर की तरह मृत्यु पाकर अपने आपको योद्धा कह रहे हो मोकाल! अगर तुम वास्तव में ही सच्चे योद्धा होते तो स्वयं को नहीं अपने अहंकार को मारते! शरीर का त्याग करने की जगह अभिमान का त्याग करते!...

रामभक्त हनुमान के क्रोध से भरे शब्दों ने मोकाल को बुरी तरह विचलित कर दिया! वह लड़खड़ाकर हनुमान के पैरों से आ लिपटा--

मैं भटक गया हूं भगवन! मेरा मार्गदर्शन कीजिए! मैं क्या करूं?

हे नरश्रेष्ठ महाबली भोकाल! अपने अभिमान को तिलांजलि देकर पृथ्वी पर मौजूद अपने शरीर में वापस लौटो।...
...तुम्हें पृथ्वी पर सैकड़ों ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य करने हैं जो मानवता के लिए, अत्यंत लाभ-दायक हैं।
महाबली... महाबली जागो। भोर हो चुकी है ...उठो।...
...महाबली!
ओह वृद्धवर, आप। लेकिन अभी-अभी तो मेरे सामने भगवान बजरंगबली मौजूद थे।
हमारे सिवा यहां कोई नहीं है महाबली! सोते हुए तुम शायद कोई स्वप्न देख रहे थे।
अ... आप ठीक कहते हैं। मैं सचमुच स्वप्न ही देख रहा था। एक ऐसा स्वप्न जिसमें अहंकार से अंधी मेरी आंखों को स्वयं बजरंगबली ने खोला...
...वह दुःस्वप्न कहीं वास्तविकता ना बन जाये इसके लिए मुझे अपनी इन आंखों को सदा के लिए खुली रखना होगा।
जिसे तुम दुःस्वप्न समझ रहे हो महाबली! वह हमारी माया थी जिसे हमने तुम्हारा अहंकार समाप्त करने के लिए रचा था।...

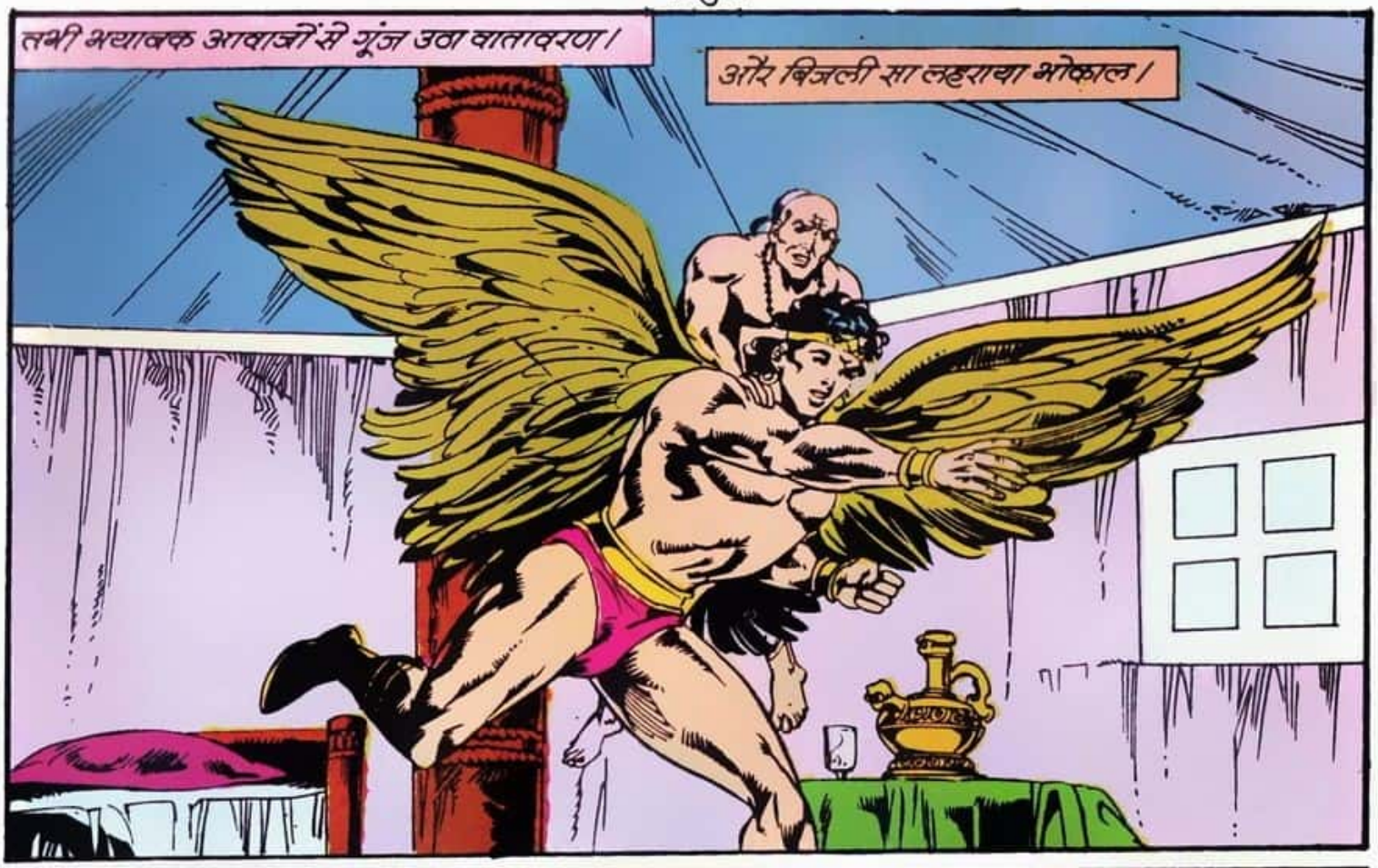
तभी अचानक आवाजों से गूंज उठा वातावरण।
और बिजली सा लहराया भोकाल।

बाहर का दृश्य हृदय कंपा देने वाला था–
उफ! हमारे बाहर आते ही हमारे शिविर का कचूमर निकल गया वीर!
परन्तु वृद्धवर हमारे अन्य साथी तो इस मृत्यु वर्षा से नहीं बच पा रहे हैं!

और फिर--
हिम चट्टानों की यह वर्षा निःसंदेह ही किसी शत्रु की माया है और वह शत्रु कौन है मुझे इसका पता तुरन्त ही लगाना होगा।
अंधाधुंध बरसती उन हिम चट्टानों का रहस्य जानने के लिए निकल पड़ा था भोकाल...

...जिन्होंने चहुं ओर विनाश का तांडव मचा दिया था--
बचो साथियों! इन हिम चट्टानों के नीचे दबने से...
बचाओऽऽऽ
आ ह ह

...अपने आपको बचाओ।
ओह!

स्वयं को भी बचाइये भीलराज!
भीलराज पर गिरती उस भारी हिम चट्टान को उस प्रलयंकारी अस्त्र ने खील-खील होने के लिए विवश कर दिया...

... जो उस बलवान के हाथों में थमा था--
इन हिम चट्टानों का नाश करने की बागडोर हमने संभाल ली है भीलराज !
अब आप निश्चिंत हो जाइये...
... अब एक भी चट्टान बिना खंड-खंड हुए धरा तक नहीं पहुंच पायेगी !
भड़ाक
इन चट्टानों के पश्चात् नष्ट होने की बारी है उसकी, जिसके कारण ये यहां बरस रही हैं।
अतिक्रूर का विध्वंसकारी अस्त्र...
... और धनुषा के अद्भुत बाण तेजी से बरसती हिम चट्टानों को नष्ट करते जा रहे थे--
लेकिन शीघ्र ही वे उन चट्टानों की चपेट में आ गये--
हाईई
ओहह!
भारी चट्टानों ने दोनों को अपने नीचे दबा लिया था।

अब हिम चट्टान रूपी मौत का अकेला ही सामना कर रहा था भोकाल--
मुझे प्रहारा से निर्वात घेरा बनाना होगा।...
... जो अपनी शक्ति से सभी हिम चट्टानों को खींचकर अपने में समाकर उन्हें नष्ट कर दे!
प्रहारा की अद्भुत शक्तियों से निर्मित वह निर्वात घेरा...

★ निर्वात (वैक्यूम) = ऐसी जगह जहां वायु का एक अणु भी न हो।

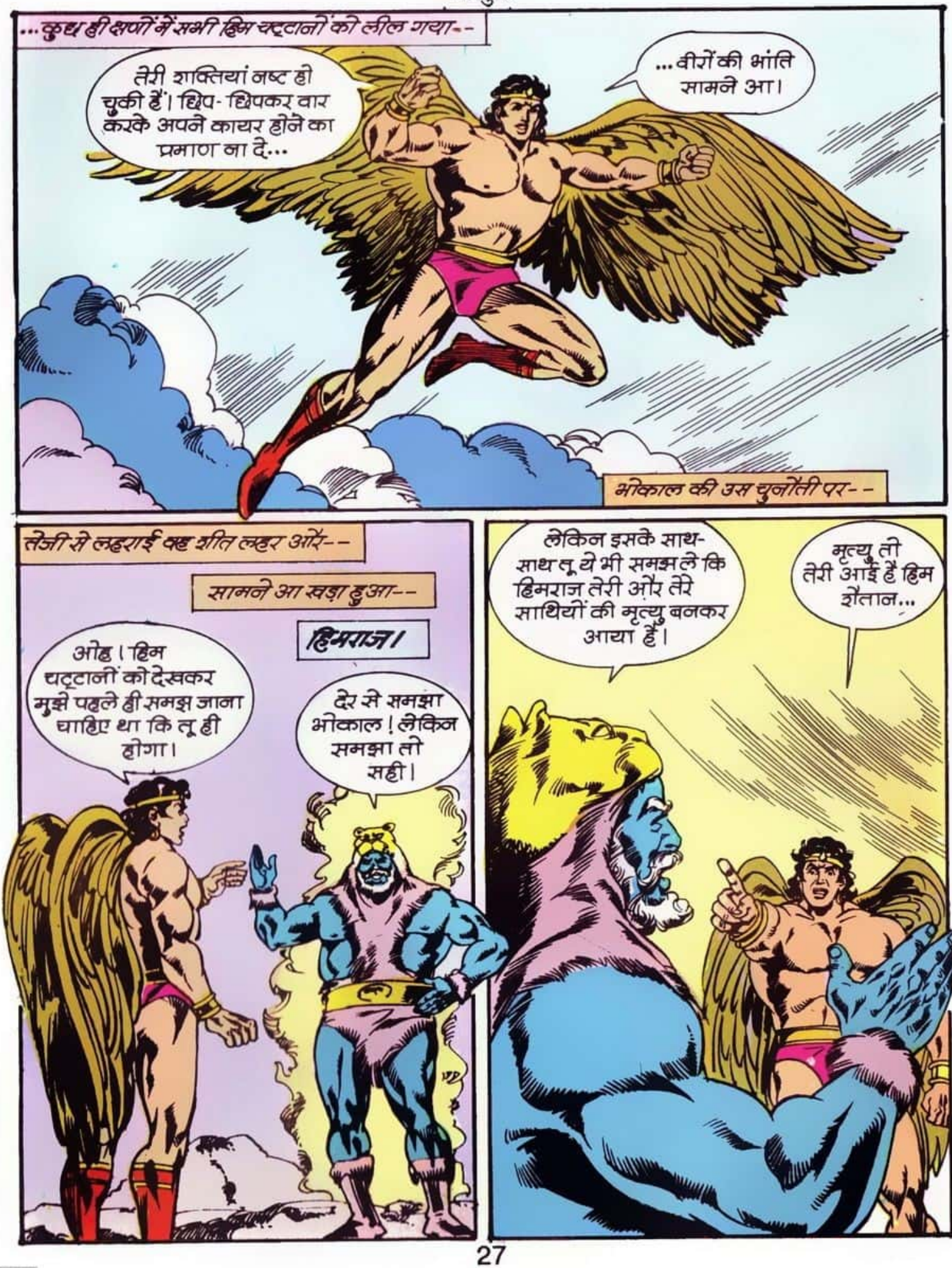
...कुछ ही क्षणों में सभी हिम चट्टानों को लील गया--
तेरी शक्तियां नष्ट हो चुकी हैं। छिप-छिपकर वार करके अपने कायर होने का प्रमाण ना दे...
...वीरों की भांति सामने आ।
भोकाल की उस चुनौती पर--
तेजी से लहराई वह शीत लहर और--
सामने आ खड़ा हुआ--
हिमराज।
ओह। हिम चट्टानों को देखकर मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था कि तू ही होगा।
देर से समझा भोकाल! लेकिन समझा तो सही।
लेकिन इसके साथ-साथ तू ये भी समझ ले कि हिमराज तेरी और तेरे साथियों की मृत्यु बनकर आया है।
मृत्यु तो तेरी आई है हिम शैतान...

...और यह बात प्रहारा की शक्तियां तुझे शीघ्र ही समझा देंगी!
हा हा हा! एक स्त्री के अस्त्र को शीश पर रखकर महाबली बन रहा है भोकाल, लेकिन मैं तुझे बता दूं कि यह अस्त्र हिमराज का ना आज बाल बांका कर पायेगा और ना तब कर पाया था...

...जब यह उस तुरीन के मस्तक पर मौजूद था जिसे मैंने तड़पा-तड़पाकर मारा...
...प्रहारा के होते हुए भी वह मेरे हाथों यातनाएं सहकर चीख-चीखकर मरी।
विस्फोट की भांति भोकाल के कानों में गूंजे हिमराज के शब्द-
तूने मेरी तुरीन को मारा था।
हां भोकाल! मैंने ही बड़ी बेरहमी से उसकी हत्या की थी।
मेरे इन हाथों ने ही उसे काल के गाल में धकेला था।

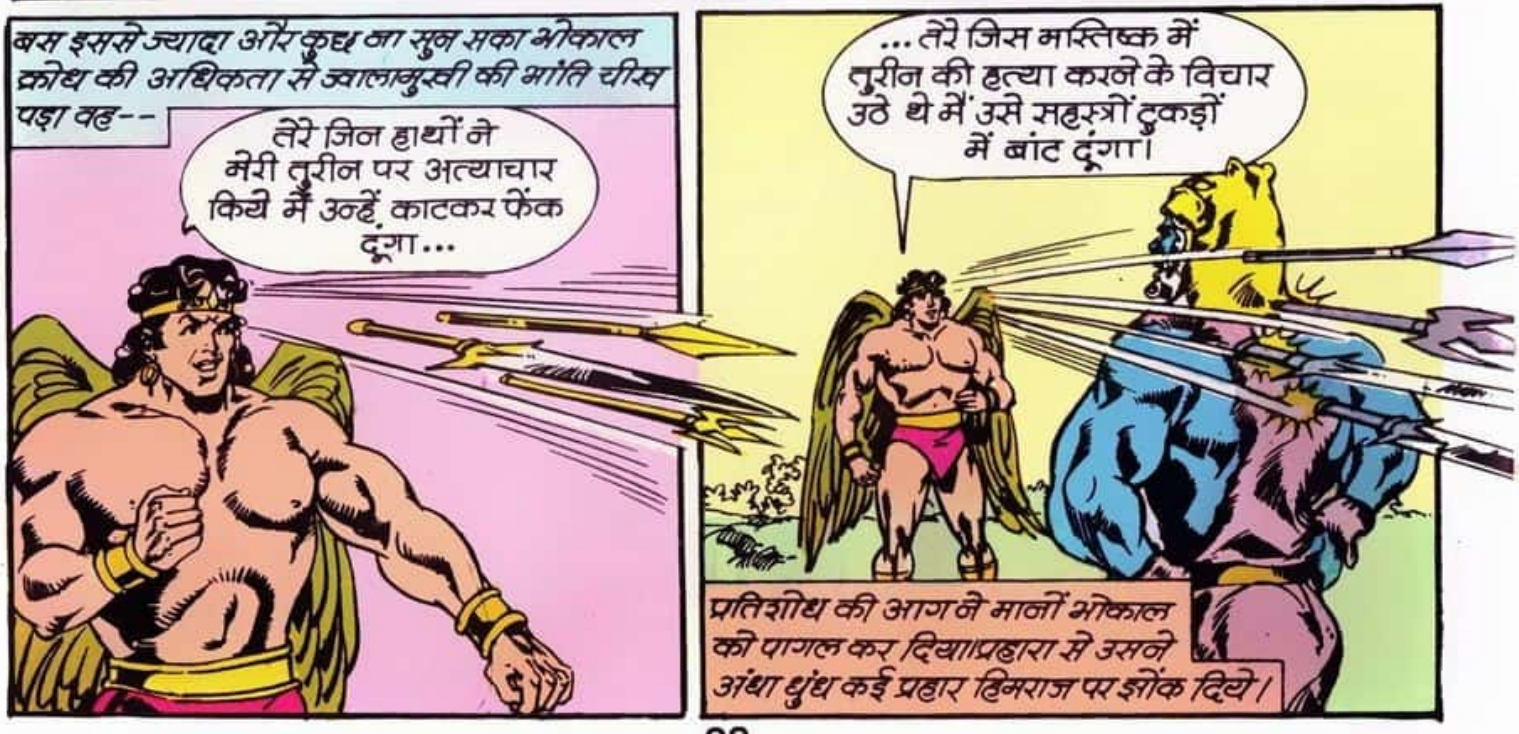
बस इससे ज्यादा और कुछ ना सुन सका भोकाल क्रोध की अधिकता से ज्वालामुखी की भांति चीख पड़ा वह--
तेरे जिन हाथों ने मेरी तुरीन पर अत्याचार किये मैं उन्हें काटकर फेंक दूंगा...
...तेरे जिस मस्तिष्क में तुरीन की हत्या करने के विचार उठे थे मैं उसे सहस्त्रों टुकड़ों में बांट दूंगा।
प्रतिशोध की आग ने मानों भोकाल को पागल कर दिया।प्रहारा से उसने अंधा धुंध कई प्रहार हिमराज पर झोंक दिये।

लेकिन वह हिमराज के शरीर पर खरोंच भी ना डाल पाया–

हा हा हा! इस बचकानी शक्ति से तू हिमराज का कुछ नहीं बिगाड़ सकता भोकाल! किसी महाशक्ति का प्रयोग कर।

हा हा हा

तुरन्त ही भोकाल के हाथ में प्रकट हुआ एक दिव्यास्त्र--

तुझे समाप्त करने के लिए आज मुझे ब्रह्माण्ड की सबसे बड़ी शक्ति का भी उपयोग करना पड़ा तो...

...में हिचकूंगा नहीं...

...तब ही रुकेंगे मेरे हाथ...

सांय

...जब तेरी सांसें रुक जायेंगी।

हिमराज को हर दशा में समाप्त करने के प्रयत्न में जुटा भोकाल, कभी एक दिव्यास्त्र प्रयोग कर रहा था तो कभी दूसरा--

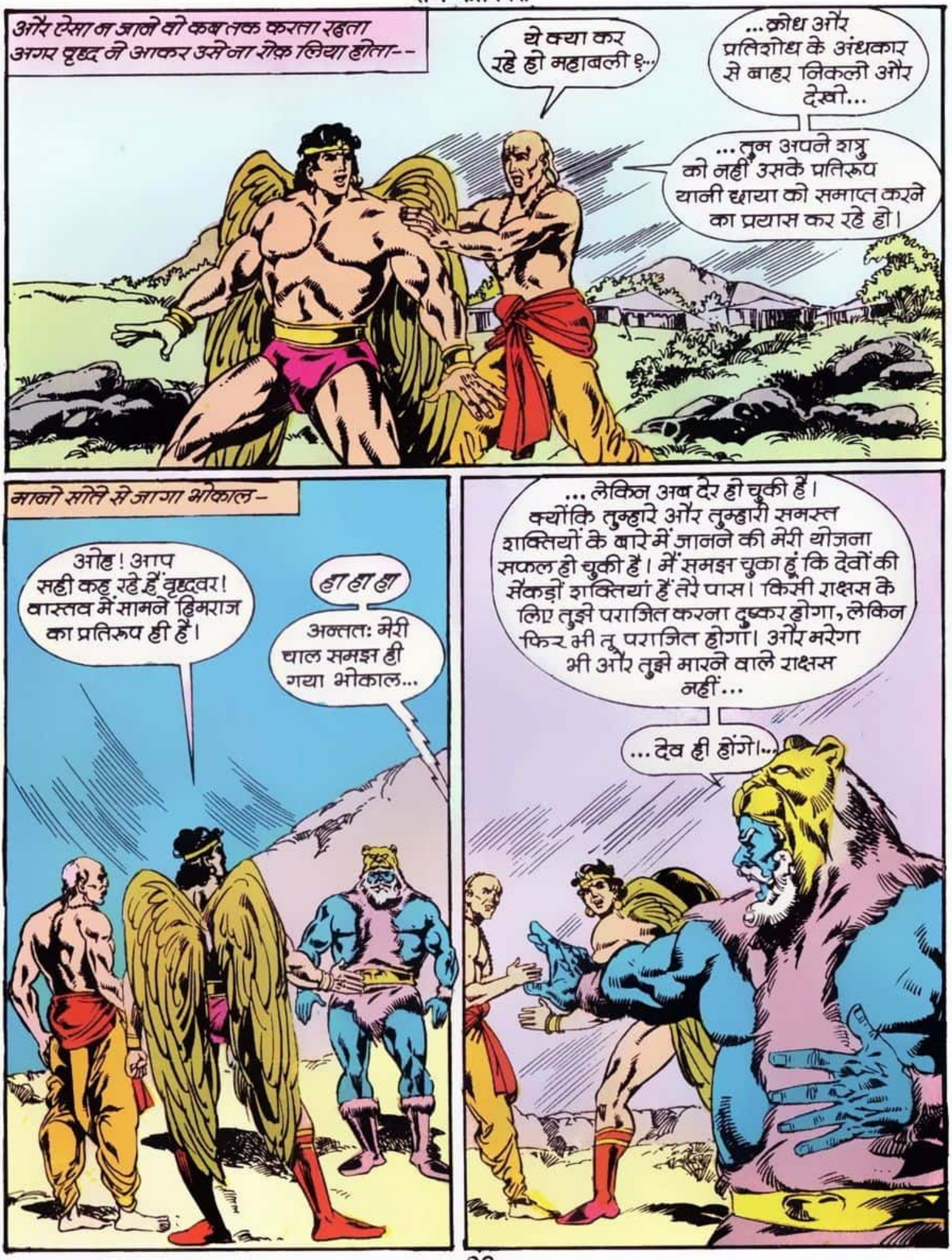
और ऐसा न जाने वो कब तक करता रहता अगर वृद्ध ने आकर उसे ना रोक लिया होता--
ये क्या कर रहे हो महाबली ?...
...क्रोध और प्रतिशोध के अंधकार से बाहर निकलो और देखो...
...तुम अपने शत्रु को नहीं उसके प्रतिरूप यानी छाया को समाप्त करने का प्रयास कर रहे हो।
मानो सोते से जागा भोकाल-
ओह ! आप सही कह रहे हैं वृद्धवर! वास्तव में सामने हिमराज का प्रतिरूप ही है।
हा हा हा
अन्ततः मेरी चाल समझ ही गया भोकाल...
...लेकिन अब देर हो चुकी है। क्योंकि तुम्हारे और तुम्हारी समस्त शक्तियों के बारे में जानने की मेरी योजना सफल हो चुकी है। मैं समझ चुका हूं कि देवों की सैकड़ों शक्तियां हैं तेरे पास। किसी राक्षस के लिए तुझे पराजित करना दुष्कर होगा, लेकिन फिर भी तू पराजित होगा। और मरेगा भी और तुझे मारने वाले राक्षस नहीं...
...देव ही होंगे।...

... इसलिए अब मुझे अपनी हिम शक्ति के साथ अपनी तपशक्ति का भी इनके विरूद्ध प्रयोग करना होगा!
यह काम करेगी ब्रह्मा जी से प्राप्त यह रुद्राक्ष माला जिसकी शक्ति के वश में होकर कोई भी देवता भोकाल के विरुद्ध युद्ध करने के लिये विवश हो जायेगा।

इस समय भोकाल के वारों के प्रत्युत्तर के लिये ऐसे देव का आह्वान उचित रहेगा जो इसके प्रहारों का रुख मोड़ दे। और वो देव निश्चिय ही हैं...
...पवनदेव!
पवनदेव का स्मरण करते ही...

... वे हिमराज के सामने आ खड़े हुए--
कहो वत्स हिमराज! क्यों याद किया हमें?
मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है पवनदेव...

... अपने उन शत्रुओं को समाप्त करने के लिए!
ओह! ये तो मानवश्रेष्ठ भोकाल और हमारा पुत्र हनुमान है!
शत्रु की तरफ देखते ही हतप्रभ रह गये पवनदेव--

पवनदेव की बेचैनी को तुरन्त ही ताड़ गया हिमराज-
क्यों पवनदेव! शत्रुओं को देखकर तुम्हारा विचार बदल गया या फिर ब्रह्माजी का वरदान झूठा था।...

... देव पिता ब्रह्मा का वरदान व्यर्थ नहीं जा सकता।
हम तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध अवश्य करेंगे।

ब्रह्मा के वरदान ने पवनदेव को विवश कर डाला था-
ओह! एकाएक पवन इतनी तीव्र गति से कैसे चलने लगी?

Uploaded for RFN Community

उठाओ शस्त्र। नहीं तो हमारा प्रचण्ड वेग तुम्हें सेना समेत सौ योजन दूर उठा कर फेंक देगा।
??
इधर वायु देव की शक्ति अपना प्रभाव दिखा रही थी।
उधर भोकाल अभी भी निर्णय नहीं कर पा रहा था कि वो क्या करे।
वृद्धवर! आप ही बतायें संसार को जीवन-दायिनी वायु देने वाले देवता पर मैं कैसे वार कर सकता हूं?
महाबली! युद्ध-क्षेत्र में युद्ध करना ही योद्धा का धर्म है। फिर चाहे पुत्र के सामने पिता ही क्यों न हो।
वृद्ध के रूप में पवनपुत्र स्थिति की गंभीरता को जान चुके थे ...तभी हतोत्साहित भोकाल को अपने पिता से युद्ध करने के लिये प्रेरित कर रहे थे--

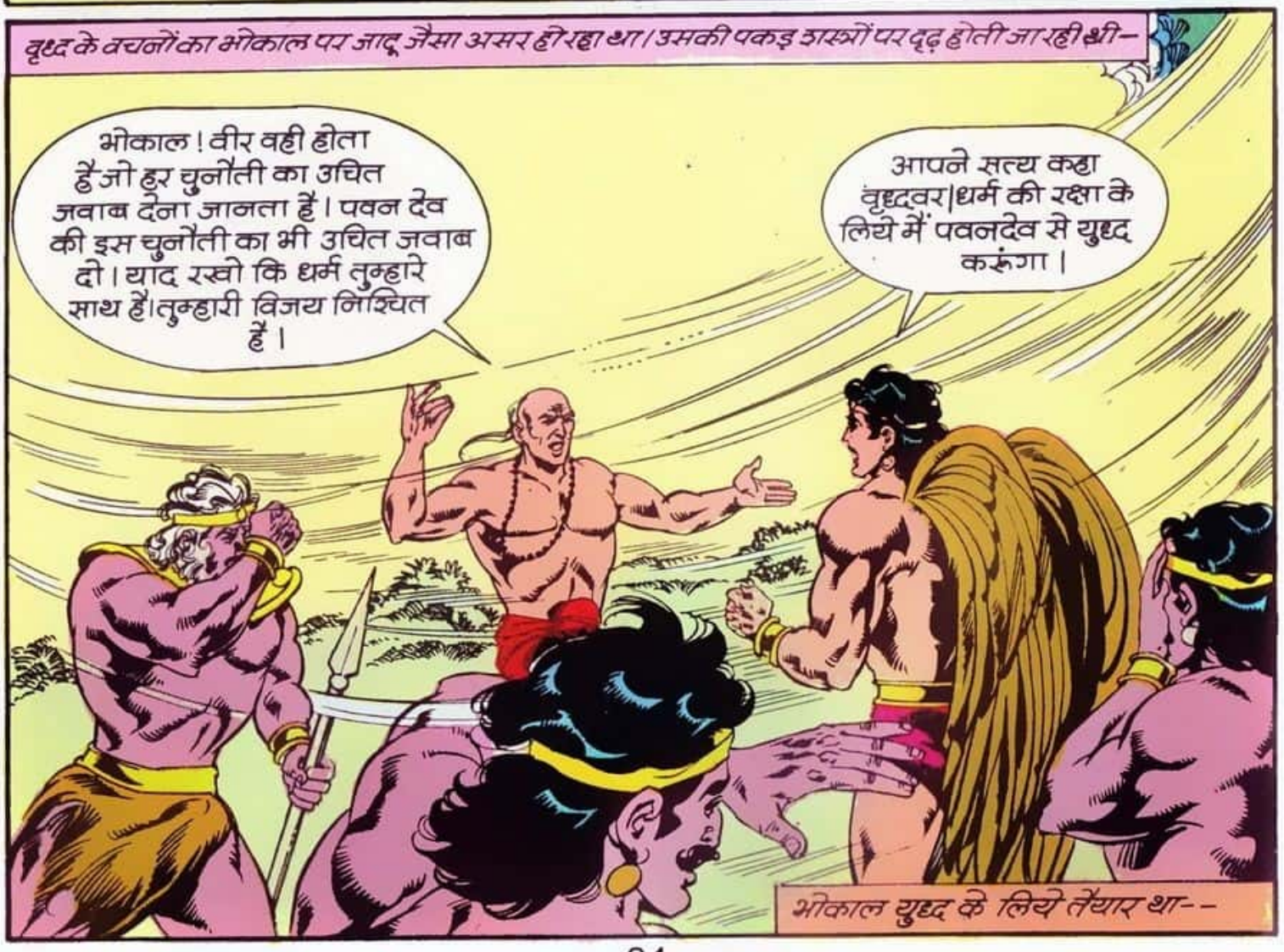
वृद्ध के वचनों का भोकाल पर जादू जैसा असर हो रहा था। उसकी पकड़ शस्त्रों पर दृढ़ होती जा रही थी--
भोकाल! वीर वही होता है जो हर चुनौती का उचित जवाब देना जानता है। पवन देव की इस चुनौती का भी उचित जवाब दो। याद रखो कि धर्म तुम्हारे साथ है। तुम्हारी विजय निश्चित है।
आपने सत्य कहा वृद्धवर। धर्म की रक्षा के लिये मैं पवनदेव से युद्ध करूंगा।
भोकाल युद्ध के लिये तैयार था--

पवनपुत्र मन ही मन पिता से युद्ध की आज्ञा मांग रहे थे--

हमें युद्ध की आज्ञा दें पिताश्री! यदि आप ब्रह्माजी के वरदान के कारण विवश हैं तो हम धर्म का साथ देने के लिये विवश हैं!

वाह पुत्र! वास्तव में तुम बल, बुद्धि, विद्या में निपुण हो। तुम्हारी विजय हो।

पवनदेव ने अपने पुत्र को विजय का आशीर्वाद दे दिया--

भोकाल के जवाबी आक्रमण से पवनदेव की तन्द्रा भंग हुई।

पवनदेव! प्रहारा की शक्ति से बनी यह विशाल दीवार आपके वेग को हम तक नहीं पहुंचने देगी।

अच्छा प्रयास है। पर हमारी शक्तियों से तुम परिचित नहीं हो भोकाल!

वायु का वेग बढ़ाते ही तुम्हारी दीवार ने हमें रास्ता दे दिया।

हम पवनदेव की शक्तियों से भली भांति परिचित हैं। भोकाल इनके सामने अधिक देर नहीं टिक सकेगा।

पवनपुत्र की चिन्ता व्यर्थ नहीं थी।

भोकाल! यह हमारी चक्रवात शक्ति तुम्हारे किसी भी वार को हम तक नहीं पहुंचने देगी। बल्कि तुम्हारे ही वारों को दुगनी तीव्रता से तुम्हारी ओर उछाल देगी।

हमारे पास अस्त्र शस्त्रों की कोई कमी नहीं है पवनदेव! न ही शीश कटाने वालों की। देखते हैं कब तक आपकी शक्ति आपका साथ देती है।

पवनदेव की शक्ति भीषण थी जो वारों को दुगनी गति से वापिस फेंक रही थी।
लगता है पवनदेव की यह शक्ति शीघ्र ही हमारी सेना को धराशायी कर डालेगी।
ओफ्फ!
आह्ह
आह्ह
भड़ाक
खच्च

इसी के साथ वहशी ठहाका लगा उठा हिमराज--
हा हा हा! चले थे हिमराज को सैकड़ों टुकड़ों में बांटने।
पवनदेव! अब बताओ भोकाल को कि हिमराज का शत्रु कैसे तड़प-तड़प कर मरता है।
हिमराज के कहने पर एक बार फिर आगे बढ़े पवनदेव--

अब उनके सामने आ खड़ा हुआ उनके जिगर का टुकड़ा--
पिताश्री! रुक जाइये।

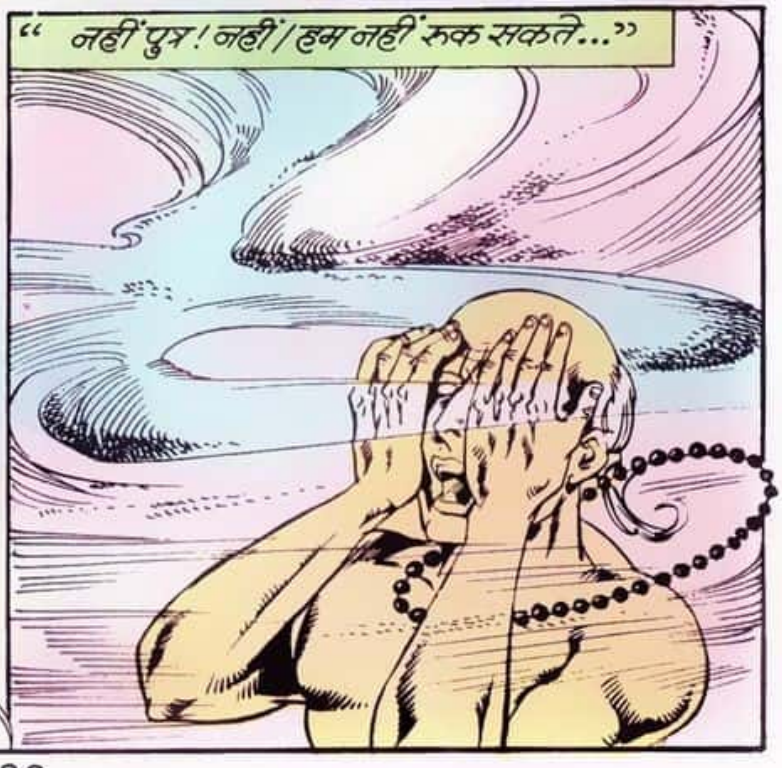
" नहीं पुत्र! नहीं! हम नहीं रुक सकते..."

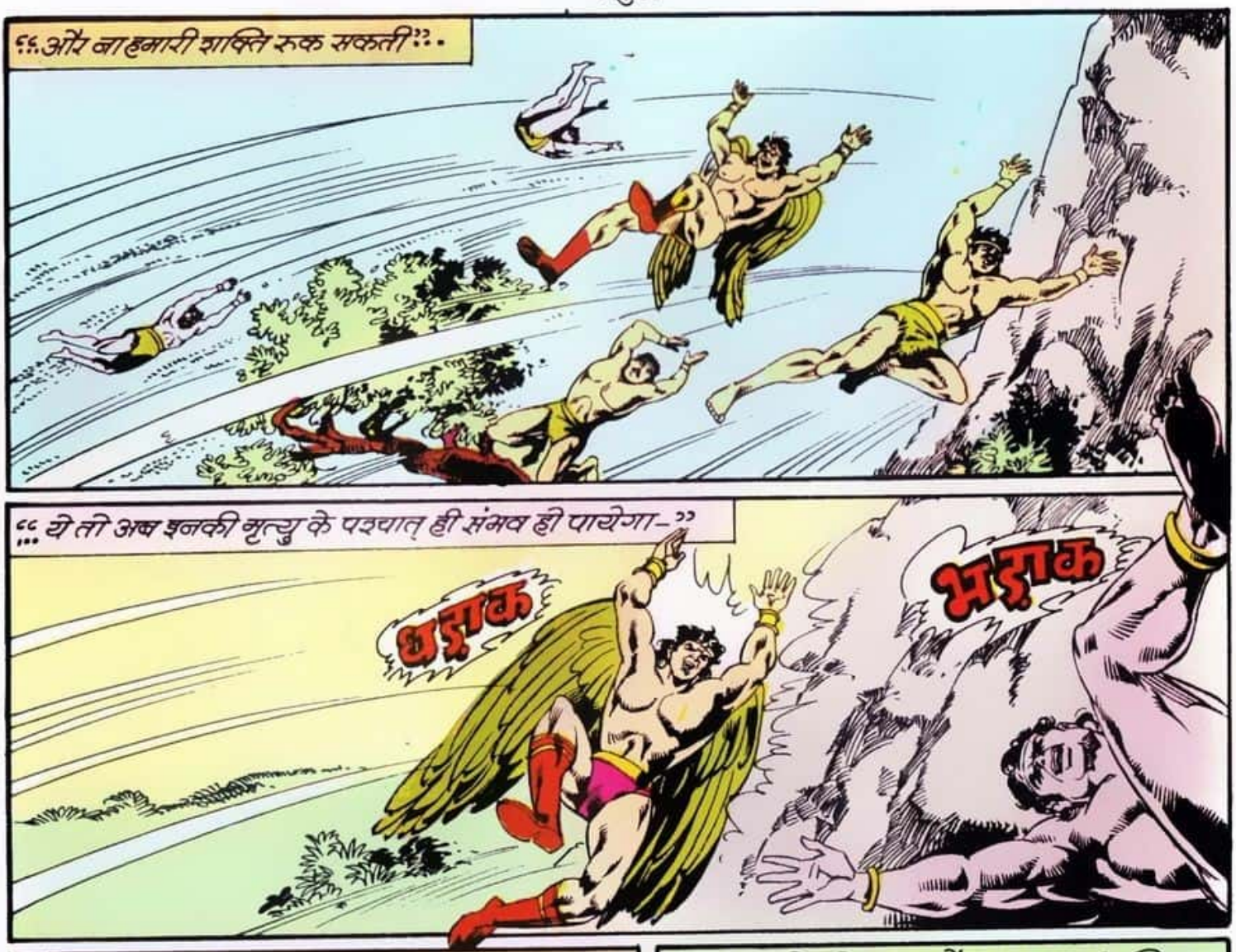
"..और वो हमारी शक्ति रुक सकती"..
"... ये तो अब इनकी मृत्यु के पश्चात् ही संभव हो पायेगा-"
धड़ाक
भड़ाक

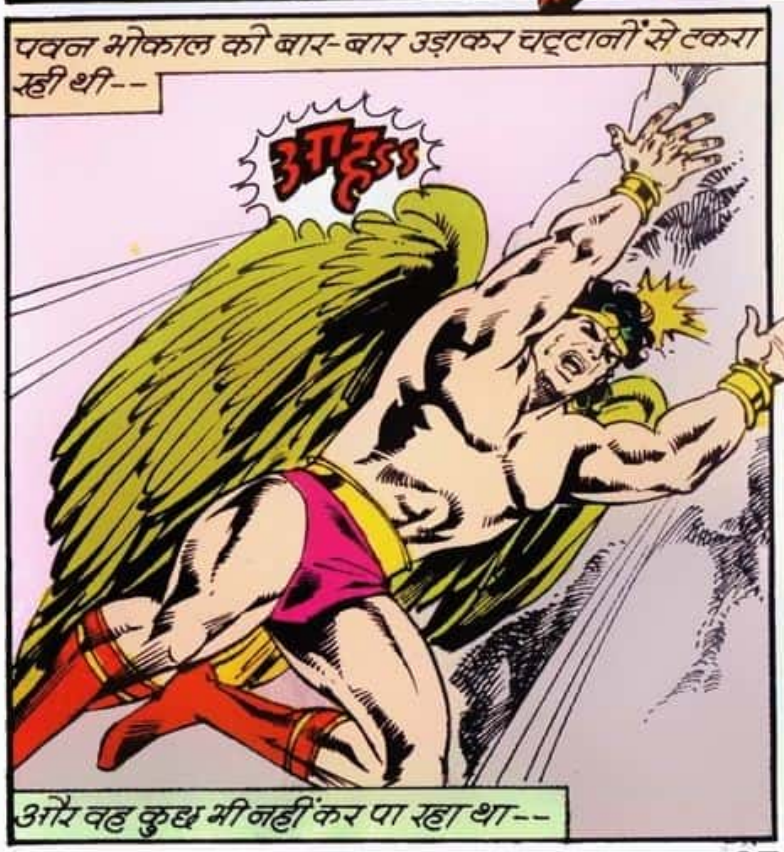
पवन भोकाल को बार-बार उड़ाकर चट्टानों से टकरा रही थी--
धड़ाक
और वह कुछ भी नहीं कर पा रहा था--

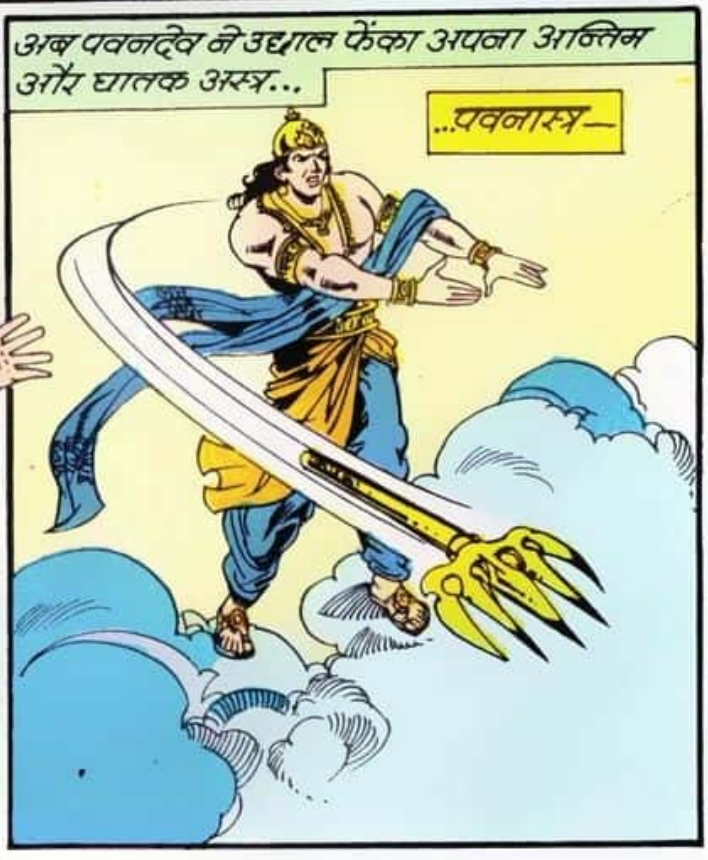
अब पवनदेव ने उछाल फेंका अपना अन्तिम और घातक अस्त्र...
...पवनास्त्र-

इसी के साथ दृढ़ होता चला गया उस संकटमोचक का चेहरा--

पिताश्री के पवनास्त्र को भोकाल व उसकी सेना से नहीं हमसे टकराना होगा।

जिसे देख तड़प उठा एक पिता का हृदय--

हट जाओ पुत्र! पवनास्त्र के सामने से हट जाओ।

नहीं। क्योंकि आज अगर हम हट गये तो समाप्त हो जायेगा भोकाल और अगर भोकाल समाप्त हो गया तो...

"...समाप्त हो जायेगी सम्पूर्ण मानवता-"

मानवता के रक्षक पुण्य के रखवाले के लिए आज एक देवता स्वयं का बलिदान देने पर उतारू था...

...और अब ऐसा होने में मात्र पलक झपकने भर की देर थी...

...कि हो गया एक चमत्कार!

हमें ऐसा लगा जैसे हमारे पिता ने हमारे शीश पर प्रेम से हाथ फिराया हो।

वो भीषण पवनास्त्र पवनपुत्र की परिक्रमा करके अदृश्य हो गया--

मात्र उस रामभक्त के चेहरे पर थी मुस्कान...

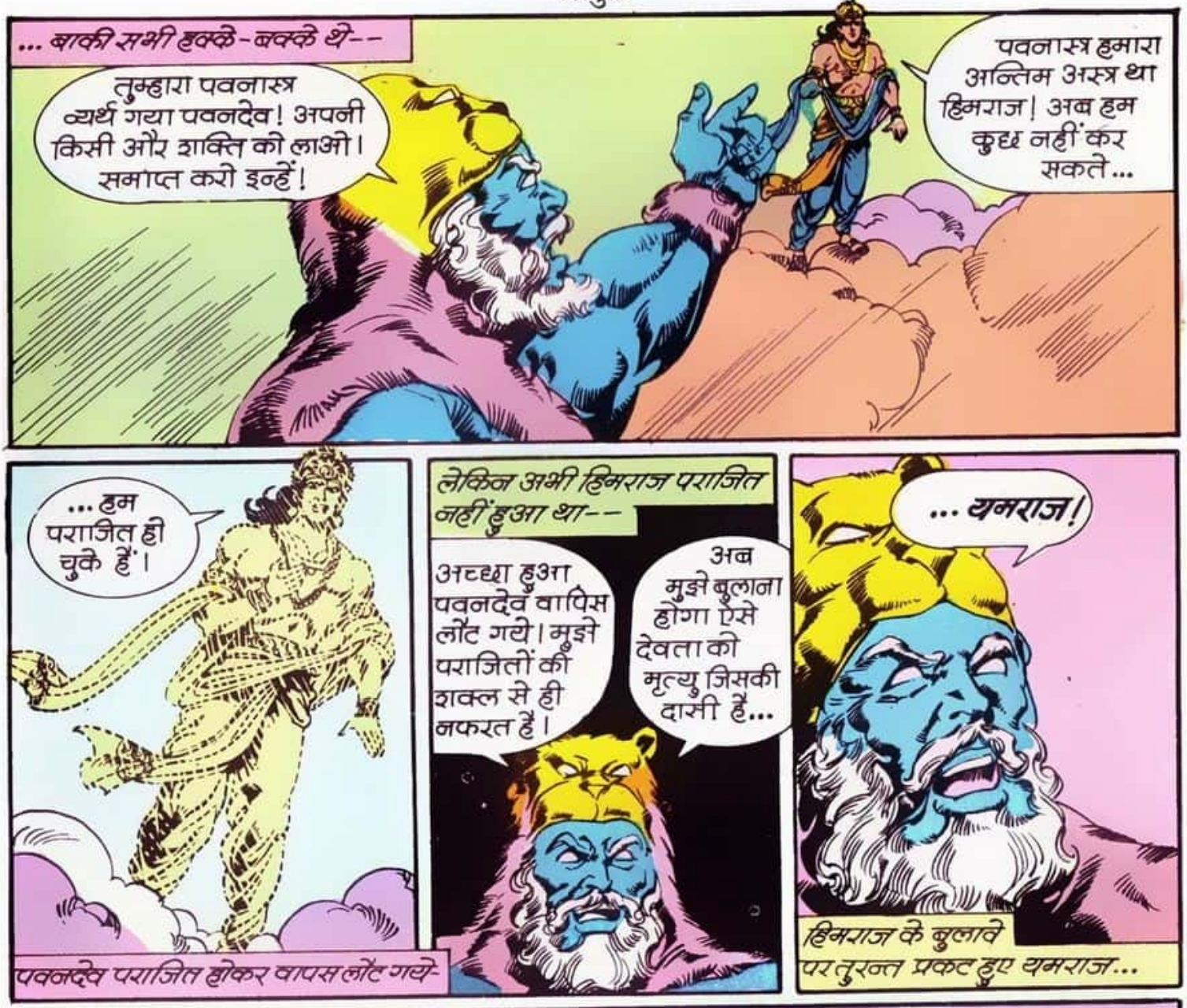
... बाकी सभी हक्के-बक्के थे--
तुम्हारा पवनास्त्र व्यर्थ गया पवनदेव! अपनी किसी और शक्ति को लाओ। समाप्त करो इन्हें!
पवनास्त्र हमारा अन्तिम अस्त्र था हिमराज! अब हम कुछ नहीं कर सकते...
... हम पराजित हो चुके हैं।
पवनदेव पराजित होकर वापस लौट गये-
लेकिन अभी हिमराज पराजित नहीं हुआ था--
अच्छा हुआ पवनदेव वापिस लौट गये। मुझे पराजितों की शक्ल से ही नफरत है।
अब मुझे बुलाना होगा ऐसे देवता को मृत्यु जिसकी दासी है...
... यमराज!
हिमराज के बुलावे पर तुरन्त प्रकट हुए यमराज...

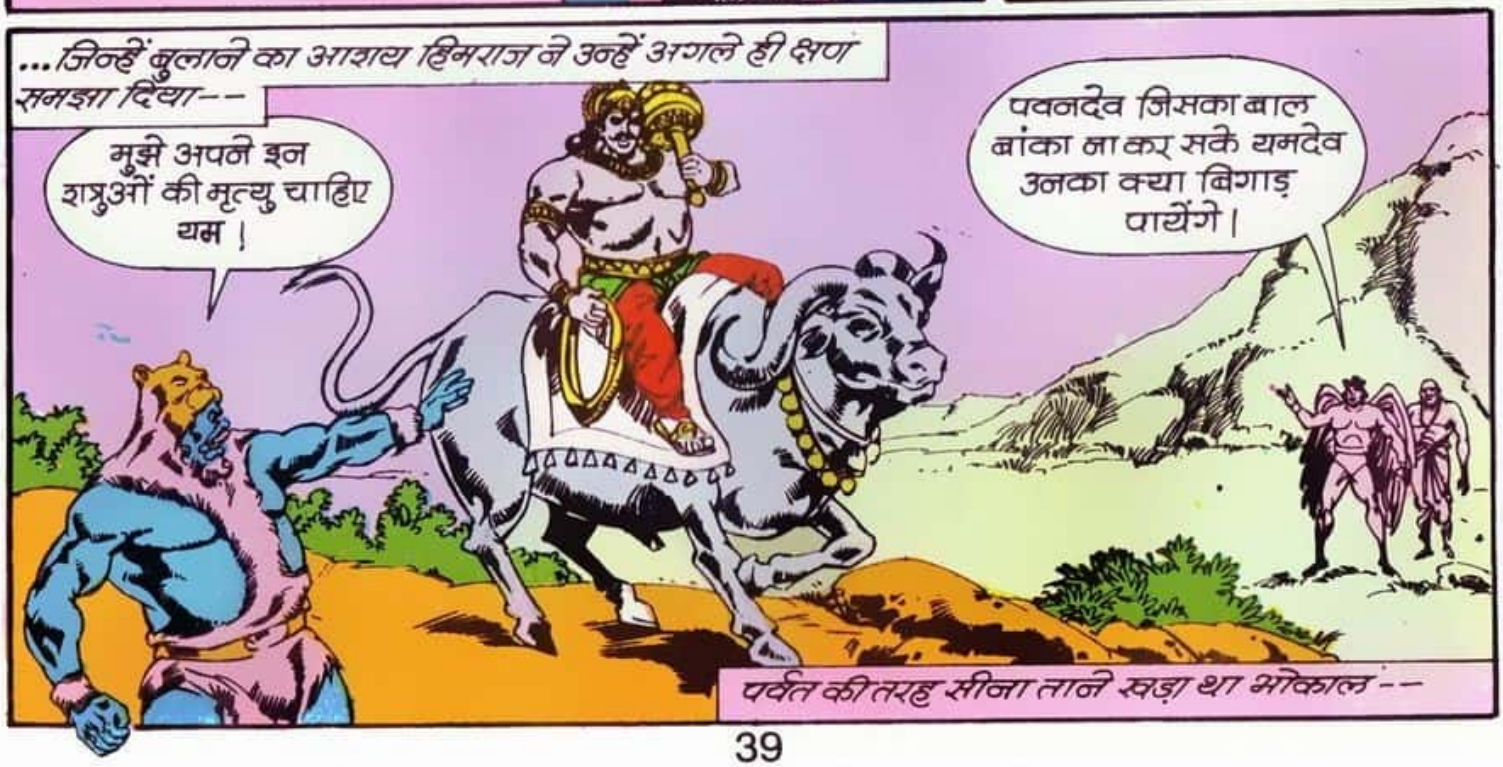
...जिन्हें बुलाने का आशय हिमराज ने उन्हें अगले ही क्षण समझा दिया--
मुझे अपने इन शत्रुओं की मृत्यु चाहिए यम!
पवनदेव जिसका बाल बांका ना कर सके यमदेव उनका क्या बिगाड़ पायेंगे।
पर्वत की तरह सीना ताने खड़ा था भोकाल --

Ankur's UPload

...परन्तु यह बात तुम्हारी समझ में आने से पहले ही तुम्हें मौत आ जाएगी।

यमराज ने उसे चट्टान पर दे मारा—

धड़ाक

आहह

टकराव इतना भीषण था कि भोकाल के अंग-अंग में पीड़ा की लहर दौड़ गई...

...उसने दुबारा उठने की कोशिश की, लेकिन उठ ना पाया--

तंत्र और तलवार का धनी भोकाल धराशायी हो चुका था...

...और यह हिमराज की विजय थी-

हा हा हा! धन्यवाद यमदेव! अब तुम वापस जा सकते हो, भोकाल के प्राणों को अपने साथ लेकर।

ओह!

हिमराज की इस बात पर निश्चय ही यमराज भी आश्चर्यचकित रह गये-

विवशता उनके चेहरे पर नजर आई, लेकिन फिर भी उन्हें वह मृत्युकारक अस्त्र संभालना ही पड़ा-

ओह! मृत्युदण्ड संभाल चुके हैं यम जिसके चलने का एक ही अर्थ है भोकाल की मृत्यु।

महाबली ! संभलो। तुम्हारा एक क्षण का विलम्ब तुम्हारे साथ-साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के विनाश का कारण बन सकता है... क्योंकि...

... मृत्युदेव तुम्हें समाप्त करने के लिए अपना मृत्युदण्ड चला चुके हैं।

सचमुच यमराज ने चला दिया था वह मृत्युदण्ड...

...जिसने भोकाल जैसे पराक्रमी का नाम पृथ्वी से मिटा देना था-

वृद्ध रूपी हनुमान भी उनकी दर्दनाक मौत देखने के सिवा कुछ नहीं कर सकते थे-

लेकिन फिर भी बहुत क्रुद्ध हुआ--

जब तक ब्रह्माण्ड पर एक भी पापी जीवित है भोकाल समाप्त नहीं हो सकता।

तेजी से संभले भोकाल ने गरजते हुए उछाल फेंका था यमदेव का मृत्युपाश...

... जो पलक झपकने के साथ ही मृत्युदण्ड से जा टकराया--

दो समान शक्तियों का जबरदस्त टकराव था ये--

और जब ऐसा होता है तो दोनों ही शक्तियों को नष्ट हो जाना होता है--

इसी के साथ हिमराज की तरफ पलटे मृत्युदेव-

क्षमा करना हिमराज! मेरी सभी शक्तियों के साथ मृत्युदण्ड को भी भोकाल ने पराजित कर दिया।...

... और पराजित होने के पश्चात हमारे यहां ठहरने का कोई औचित्य नहीं।...

... हम वापस जा रहे हैं।

अच्छा हुआ भोकाल ने हमें पराजित कर दिया अन्यथा उसके प्राण हर कर हम स्वयं को कभी क्षमा नहीं कर पाते।

एक मनुष्य के हाथों पराजित होकर भी प्रसन्न था वह देव।

इधर भोकाल ने अतिक्रूर और धनुषा को चट्टान के नीचे से निकाला--

अब तीनों पराक्रमी दृढ़ कदमों से आगे बढ़ रहे थे और उनका लक्ष्य था--

हिमराज--

लेकिन उनके आगे बढ़ते कदम अचानक रुक गये..
...क्योंकि उनकी आंखों को दिख रहा था वह अविश्वसनीय दृश्य--
ये एकाएक दस हिमराज कहां से प्रकट हो गये?
हा हा हा!
हमें भ्रमित करने के लिए हिमराज ने यह माया रची है अतीक!
सभी हिमराजों को समाप्त करना शुरू करो! उनमें से एक तो वास्तविक होगा ही।
इस कार्य में तुम्हारा सहयोग देने में भी आ गया हूं।
अपना धनुष-बाण संभाले धनुषा भी आगे बढ़ा...
... और भोकाल व अतिक्रूर के साथ हिमराज के दसों रूपों को नष्ट करने में जुट गया--
तीनों के हाथ विद्युत की सी तेजी से चल रहे थे उन दस रूपों में मौजूद हिमराज के वास्तविक रूप को समाप्त करने के लिए-

लेकिन कहां जानते थे वे कि बाकी नौ की तरह दसवां हिमराज भी माया का ही एक रूप था...
...वास्तविक हिमराज तो अपने मायावी रूपों से दूर खड़ा स्तब्ध सामने के सारे दृश्य को देख रहा था--
अचानक मेरे दस रूपों ने प्रकट होकर मुझे मेरे शत्रुओं से बचा लिया इसका सीधा सा अर्थ है कि...
...अपनी कपट माया के साथ मेरी सहायता को आ पहुंचे हैं...
...कपटगुरु!
तुम्हें संकट में देखकर हमें आना ही पड़ा हिमराज! आओ, अब तुम्हें दिखाता हूं अपनी कपट विद्या का एक और चमत्कार।
आकाश से नीचे पहुंची उस तेज चमक ने हिम की सतह से टकराकर भीषणरूप धारण कर लिया-
ओफ्फ!
ओह! ये तेज चमक!
ओह!
भीषण चमक ने तीनों को आंखें बंद करने और पीड़ा से कराहने के लिए विवश कर दिया--

Ankur's UPload

कुछ क्षणों बाद अब तीनों की आंखें खुलीं तो वे आश्चर्य से फटी की फटी रह गईं--

अरे, ये मैं कहां आ गया ?

अतिक्रूर और धनुषा कहां हैं ?

इस विचित्र और रहस्यमयी स्थान पर मुझे किसने पहुंचाया ?

भोकाल और अतिक्रूर यहां कहीं नजर नहीं आ रहे ?

दूर तक फैले इस रेगिस्तान में मैं कहां से आ गया ?

भोकाल और धनुषा कहां गये ?...

मेरे पीछे ये आवाज कैसी ?

हा हा हा...

ओह! ये तो हिमराज द्वारा भेजे गये हिमराक्षस हैं। जो मेरी ही तरफ बढ़े आ रहे हैं...

पहले इन्हें समाप्त करने में अपना सारा ध्यान लगाऊं। फिर बाद में सोचूंगा, कहां है भोकाल और...

...धनुषा"
ओह! हिमराज द्वारा छोड़े हिम के वे गोले द्रुत-गति से मेरी ही तरफ बढ़ते आ रहे हैं...
...मुझे इनमें से एक को भी अपने पास नहीं पहुंचने देना...

... इन सबको नष्ट करके ही मैं पता लगाऊंगा कि एकाएक मुझसे बिछड़ने के बाद कहां चले गये हैं अतिक्रूर और...

..."ओकाल"
यहां भी तुषाराचार्य के शैतान पक्षियों ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। विराट रूप धारण कर ये यहां भी मेरा मांस नोचने आ पहुंचे हैं...

लेकिन ये ऐसा कर पायें उससे पहले ही मैं प्रहारा की शक्तियों से इन्हें समाप्त कर दूंगा।
और फिर देखूंगा कि किस मुसीबत में फंसे हैं अतिक्रूर और...

..." धनुषा–"

मेरे बाणों की बाढ़ के आगे हिमराज की शक्तियों की इस बाढ़ की कोई बिसात नहीं है।...

...शीघ्र ही मैं इन से छुटकारा पा लूंगा।

तूफान की तेजी से बरसते धनुषा के बाणों ने...

...शीघ्र ही अपनी तरफ बढ़ती उन मुसीबतों को नष्ट कर डाला–

तभी पीछे से गूंजी उस आवाज ने धनुषा को चौंकाया –

ओह ! अनियंत्रित से इधर-उधर भागते ये पशु जिनके शरीरों का हिम से ढके होना यह सिद्ध करता है कि ये हिमराज के ही सेवक पशु हैं।...

...हालांकि अभी इन अनियंत्रित हिम पशुओं का लक्ष्य में नहीं हूं लेकिन...

...हिमराज के इशारे पर ये कभी भी मुझे अपना लक्ष्य बना सकते हैं।...

...ऐसा हो इससे पहले ही मुझे इन्हें समाप्त कर देना चाहिए।

सनसना उठे धनुषा के धनुष से वे सैकड़ों तीर...

...पलक झपकते ही अपने लक्ष्य पर पहुंचे-

खच्च

खच्च

घांsss

घांsss

इसी के साथ धनुषा की आंखों में आश्चर्य का सागर लहराता चला गया-

और इसका कारण था सामने पड़ी वे लाशें..

...जो हिम पशुओं की नहीं गायों की लाशें थीं--

शरीर पर हिम जमा होने की वजह से जिन्हें मैं घातक हिमपशु समझ बैठा वे तो निरीह गाएं हैं।

ओह! ये मैंने क्या कर डाला। अगर मैंने थोड़े से विवेक से काम लिया होता तो हिम के नीचे मौजूद इन गायों को मैं अवश्य ही देख लेता...

...और गोहत्या जैसा जघन्य अपराध ना करता!...

धिक्कार है मुझ अविवेकी पर, धिक्कार है मेरी धनुष विद्या पर...

...धिक्कार है मेरे धनुष-बाण पर।

ये तुम क्या कर रहे हो महान धनुर्धर संभलो! संभलो!...

...संभलो!

धनुषा के धनुष फेंकते ही मानों उसके मस्तिष्क में गूंजी वह आवाज...

...इसी बीच अतिक्रूर--

ओफ्फ! कड़ी धूप और तपती रेत की इस धरती पर इन हिमराक्षसों से लड़ने में मुझे अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। अत्यधिक गर्मी से शरीर जला जा रहा है और...

प्यास से गला सूखा जा रहा है।

...ऐसे में अगर मैंने शीघ्र ही इन्हें अपना शिकार नहीं बनाया तो ये मुझे शिकार बना लेंगे...

विद्युत की सी तेजी से चलते अतिक्रूर के हाथ...

...दुगनी तेजी से चलने लगे--

शीघ्र ही उसने हिमराक्षसों को बेजान होकर नीचे गिरने के लिए मजबूर कर दिया--

लेकिन इसी के साथ प्यास से बेहाल होकर वह भी नीचे आ गिरा--

आहह! मेरे कंठ में कांटे चुभ रहे हैं...

मस्तिष्क सुन्न पड़ता जा रहा है...

...अगर मुझे शीघ्र ही पानी नहीं मिला तो मेरे प्राण निकल जायेंगे। आह!

जिसे ब्रह्माण्ड का कोई भी बल नहीं हरा पाया था, उसे प्यास पराजित किये दे रही थी...

... और पराजय के रूप में उसे मिलनी थी एक तड़पती मौत, अगर अचानक उसकी नजर उस मनुष्य पर नहीं पड़ जाती-

व... वह वृद्ध मनुष्य! उसके पास पानी की मश्क दिखाई दे रही है मुझे!...

... अगर वह मुझे पानी दे दे तो मेरे प्राण बच सकते हैं!

पानी मिलने की आस ने अतिक्रूर के शरीर में नई जान फूंक दी। वह तेजी से रेत पर भागा...

... और उस वृद्ध तक जा पहुंचा--

वृद्धवर! प्यास से मेरे प्राण निकलने को हैं, आपके पास पानी है, मुझे पानी दे दीजिए। मेरे प्राण बच जायेंगे।

तुम युवा हो, शक्तिशाली हो। तुम पानी के बिना कुछ देर जीवित रह सकते हो...

...परन्तु मैं जर्जर बूढ़ा पानी के बिना कुछ पलों में ही मर जाऊंगा। मेरी मश्क में थोड़ा ही पानी है और मुझे उस पानी की तुमसे ज्यादा आवश्यकता है इसलिए...

...मैं तुम्हें पानी नहीं दूंगा।

वृद्ध की बात और...

... पानी की भीषण प्यास ने अतिक्रूर की सोचने-समझने की शक्ति छीन ली--

क्रोध से गरज उठा वह--

मैं पानी के लिए तड़प-तड़प कर नहीं मरना चाहता...

...मुझे पानी चाहिए!...

...किसी भी मूल्य पर!

दंताक का एक तेज प्रहार करके अतिक्रूर ने वृद्ध के हाथों से मश्क छीन ली--

और-

आह! पानी!

अपनी प्यास बुझाते अतिक्रूर को पानी के रूप में जीवन मिल गया था-

लेकिन उसके लिये उसे किसी का जीवन लेना पड़ा था--

यह बात अतिक्रूर को तब समझ आई जब प्यास बुझने के बाद उसकी सोचने-समझने की शक्ति वापस आई--

ओह! ये मैंने क्या किया? अपनी शक्ति के नशे में चूर होकर अपना जीवन बचाने के लिए मैंने एक निर्बल जर्जर वृद्ध की हत्या कर दी।

धिक्कार है ऐसी शक्ति पर जो निर्बलों का जीवन बचाने की जगह अपने स्वार्थ के लिए उनके जीवन का अंत करे...

...धिक्कार है इस प्रलयंकारी कहे जाने वाले दंताक पर जो निर्बलों के प्राण हरता है!

ये तुम्हें क्या हुआ है शक्तिमान... ...संभलो...संभलो...

...संभलो!

दंताक को एक तरफ फेंकते अतिक्रूर को उसके मस्तिष्क में गूंजी उस आवाज ने मानों झकझोर कर रख दिया--

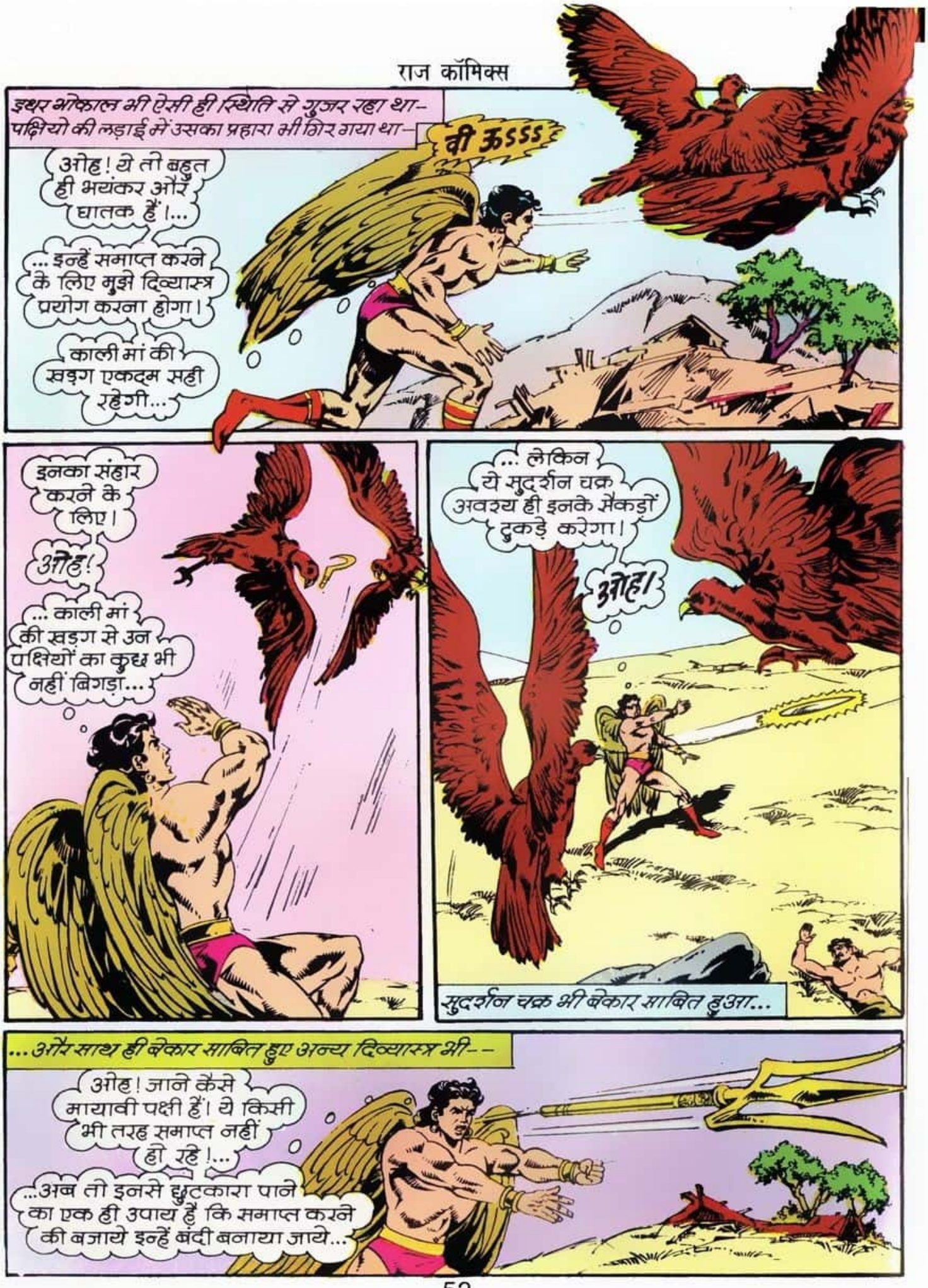
इधर भोकाल भी ऐसी ही स्थिति से गुजर रहा था– पक्षियो की लड़ाई में उसका प्रहारा भी गिर गया था–
वी ऊऽऽऽ
ओह! ये तो बहुत ही भयंकर और घातक हैं।...
... इन्हें समाप्त करने के लिए मुझे दिव्यास्त्र प्रयोग करना होगा।
काली मां की खड्ग एकदम सही रहेगी...
इनका संहार करने के लिए।
ओह!
... काली मां की खड्ग से उन पक्षियों का कुछ भी नहीं बिगड़ा...
... लेकिन ये सुदर्शन चक्र अवश्य ही इनके सैकड़ों टुकड़े करेगा।
ओहा!
सुदर्शन चक्र भी बेकार साबित हुआ...
...और साथ ही बेकार साबित हुए अन्य दिव्यास्त्र भी--
ओह! जाने कैसे मायावी पक्षी हैं। ये किसी भी तरह समाप्त नहीं हो रहे!...
...अब तो इनसे छुटकारा पाने का एक ही उपाय है कि समाप्त करने की बजाये इन्हें बंदी बनाया जाये...

...और यह काम प्रहारा आसानी से कर सकता है।
लेकिन इन मांस नोचने वालों के होते प्रहारा को पाना मुश्किल है...
...कुछ क्षण के लिए इनका ध्यान बंटाया जाये तो मैं प्रहारा को पा सकता हूं।

वह मानव शव एकदम ठीक रहेगा। मैं उस शव को उनकी तरफ उछालूंगा तो वे उसे नोचने के लिए अवश्य ही उस पर झपटेंगे।
इस तरह वे कुछ क्षणों के लिए मेरी तरफ से बेखबर हो जायेंगे।...

...मुझे प्रहारा उठाने का अवसर मिल जायेगा!
भोकाल ने उस मानव शरीर को उठाकर उन पक्षियों की तरफ उछाल दिया-

जैसे ही दोनों पक्षी उसकी तरफ झपटे भोकाल को प्रहारा उठाने का अवसर मिल गया--

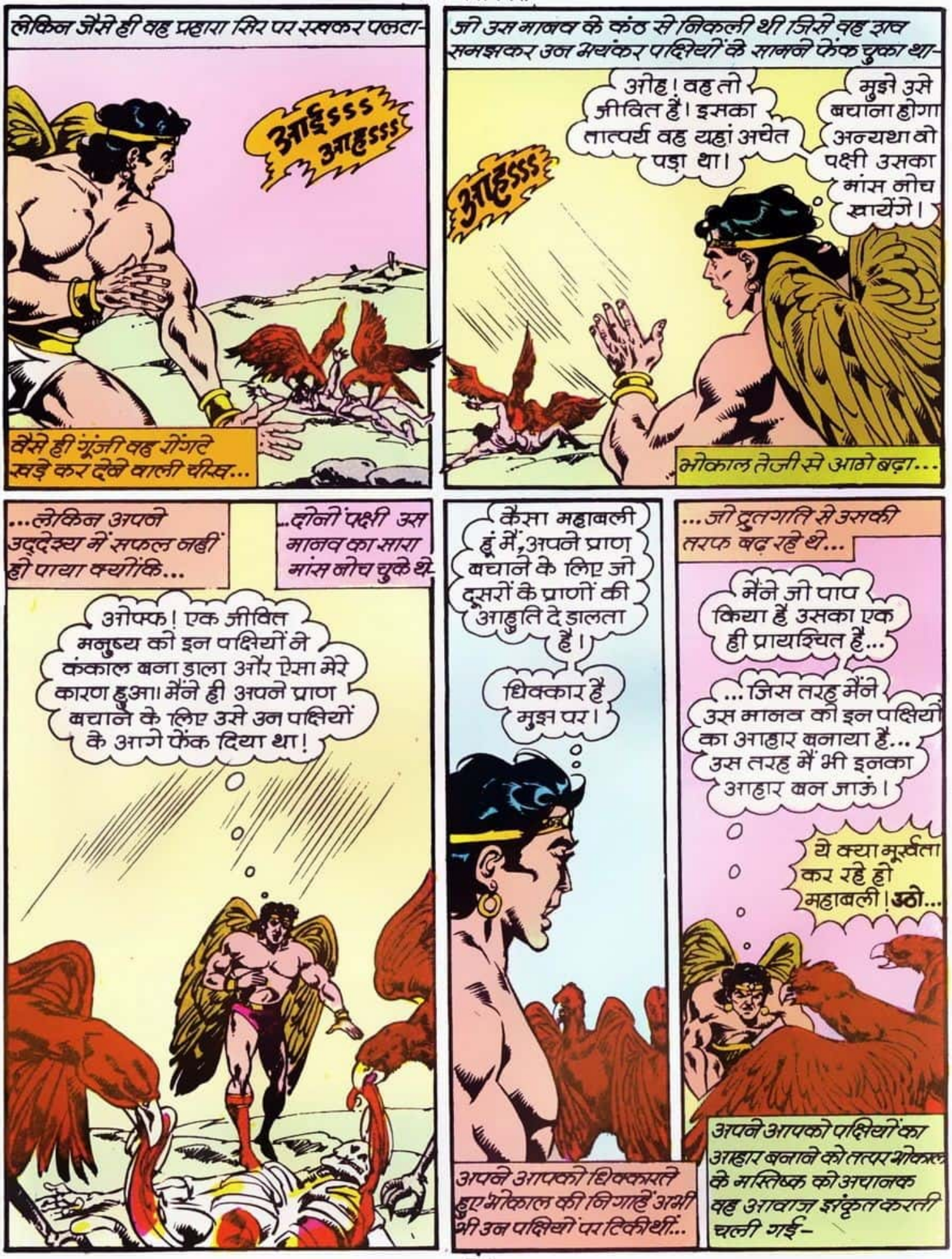
लेकिन जैसे ही वह प्रहार सिर पर रखकर पलटा-
आईsssss आहsssss
वैसे ही गूंजी वह रोंगटे खड़े कर देने वाली चीख...
जो उस मानव के कंठ से निकली थी जिसे वह शव समझकर उन भयंकर पक्षियों के सामने फेंक चुका था-
ओह! वह तो जीवित है। इसका तात्पर्य वह यहां अचेत पड़ा था।
मुझे उसे बचाना होगा अन्यथा वो पक्षी उसका मांस नोच खायेंगे।
आहsssss
भोकाल तेजी से आगे बढ़ा...
...लेकिन अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया क्योंकि...
...दोनों पक्षी उस मानव का सारा मांस नोच चुके थे
ओफ्फ! एक जीवित मनुष्य को इन पक्षियों ने कंकाल बना डाला और ऐसा मेरे कारण हुआ। मैंने ही अपने प्राण बचाने के लिए उसे उन पक्षियों के आगे फेंक दिया था!
कैसा महाबली हूं मैं, अपने प्राण बचाने के लिए जो दूसरों के प्राणों की आहुति दे डालता है।
धिक्कार है मुझ पर।
अपने आपको धिक्कारते हुए भोकाल की निगाहें अभी भी उन पक्षियों पर टिकी थीं...
...जो द्रुतगति से उसकी तरफ बढ़ रहे थे...
मैंने जो पाप किया है उसका एक ही प्रायश्चित है...
...जिस तरह मैंने उस मानव को इन पक्षियों का आहार बनाया है... उस तरह मैं भी इनका आहार बन जाऊं।
ये क्या मूर्खता कर रहे हो महाबली! उठो...
अपने आपको पक्षियों का आहार बनाने को तत्पर भोकाल के मस्तिष्क को अचानक वह आवाज झंकृत करती चली गई-

और सारे शरीर को झकझोरती चली गई--
सम्भालो अपने आपको पराक्रमियो! मृत्यु तुम सबके सिरों पर मंडरा रही है।
ओफ्फ! ये मुझे क्या हुआ था?
लड़ते-लड़ते मैं सो गया था क्या?
मेरा मस्तिष्क एकाएक अंधेरे में कैसे डूब गया था?
तीनों के मस्तिष्क जैसे ही जागृत हुए-
वैसे ही उन्हें अपनी स्थिति का भास हुआ-
मैंने अपना दंताक क्यों फेंक दिया?
मेरा धनुष मेरे हाथ से कब छूटा?
मेरे सिर से प्रहारा जमीन पर कैसे पहुंचा?
तभी तीनों के कानों में एक बार फिर गूंजी वृद्ध की आवाज-
सावधान पराक्रमियो! तुम्हारे पीछे से संकट तुम तक पहुंचने ही वाला है!
वृद्ध की इस आवाज ने मानों तीनों के शरीरों में फुर्ती का तूफान भर दिया-
तीनों तेजी से पलटे-
और अपनी तरफ बढ़ने वाले संकटों पर एक नजर डालते ही-

अपने-अपने हथियारों पर झपटे-
पलक झपकते ही तीनों के हथियार उनके हाथ में थे-

और उन हथियारों के बल पर वो अपनी तरफ बढ़ने वाले संकटों का विनाश करने में जुटे हुए थे-
सही समय पर हम इन्हें उस कपटी की कपटमाया से बाहर निकाल लाये...

...अन्यथा वह उस माया के बल पर इनके मस्तिष्क में ग्लानिता भरकर इन्हें समाप्त करने में सफल हो जाता।
तीनों योद्धा माया युद्ध में मानसिक रूप से हार जाते तो वास्तविक युद्ध में भी ये हथियार नहीं उठा पाते!
वृद्ध के चेहरे पर संतोष के चिन्ह नजर आ रहे थे।

जबकि असंतोष और क्रोध का तूफान आया हुआ था तुषाराचार्य और हिमराज के चेहरों पर-
आप की कपटमाया विफल हो गई गुरूदेव!
कैसे। हुआ ऐसा?
मैं स्वयं चकित हूं कि आखिर ये मेरी कपटमाया से बच कैसे गये?
अब इन्हें अपनी कपटमाया के ऐसे चरण में फंसाने की सोची जिससे इनकी आत्मा भी बाहर न निकल पाये।
वह कपटी अब अपना कपटचक्र चलाता...

...उससे पहले ही उस धनुर्धर के तीर चल गये जो उस कपटी की गर्दन के साथ-साथ उसके प्राण पखेरू भी ले उड़े-
खच्च खच्च
खच्च
आहsss
अपने कपटगुरू की तरह अब तू भी अपने मृत्युदेवता के पास पहुंचने की तैयारी कर ले हिम शैतान!
हिमराज मृत्यु के पास पहुंचने के लिए नहीं...
...अपितु अपने शत्रुओं को वहां पहुंचाने के लिए पैदा हुआ है।
सर्रर्र
हिमराज के हाथों से छूटे हिमशक्तियों के उस तूफान ने...
...तीनों को ले जाकर दूर फेंक दिया-
ओह!
ओफ्फ!
ओह! इस बार अत्यधिक भयंकर हैं हिमराज की शक्तियां।
तुम्हारा कहना उचित है महाबली...
...वास्तव में भयंकर हैं हिमराज की शक्तियां और इन शक्तियों से तुम यहां पार नहीं पा सकते...
...इसके लिये तो तुम्हें सूर्य की भूमि को अपनी रणभूमि बनाना होगा।

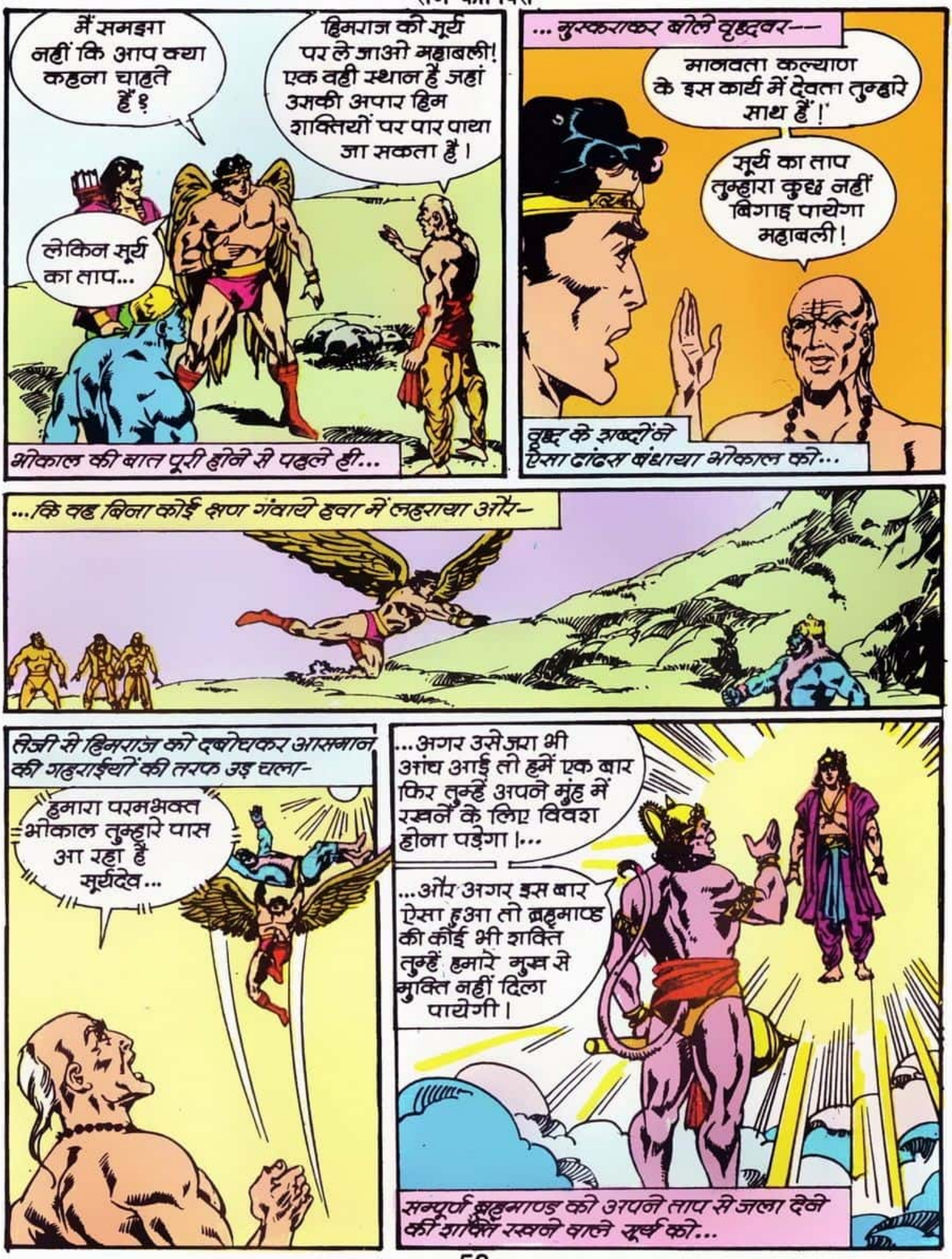
मैं समझा नहीं कि आप क्या कहना चाहते हैं ?
हिमराज को सूर्य पर ले जाओ महाबली! एक वही स्थान है जहां उसकी अपार हिम शक्तियों पर पार पाया जा सकता है।
लेकिन सूर्य का ताप...
भोकाल की बात पूरी होने से पहले ही...
... मुस्कराकर बोले वृद्धवर—
मानवता कल्याण के इस कार्य में देवता तुम्हारे साथ हैं!
सूर्य का ताप तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा महाबली!
वृद्ध के शब्दों ने ऐसा ढांढस बंधाया भोकाल को...
...कि वह बिना कोई क्षण गंवाये हवा में लहराया और—
तेजी से हिमराज को दबोचकर आसमान की गहराईयों की तरफ उड़ चला—
हमारा परमभक्त भोकाल तुम्हारे पास आ रहा है सूर्यदेव...
...अगर उसे जरा भी आंच आई तो हमें एक बार फिर तुम्हें अपने मुंह में रखने के लिए विवश होना पड़ेगा।...
...और अगर इस बार ऐसा हुआ तो ब्रह्माण्ड की कोई भी शक्ति तुम्हें हमारे मुख से मुक्ति नहीं दिला पायेगी।
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने ताप से जला देने की शक्ति रखने वाले सूर्य को...

...हनुमान की चेतावनी ने थर-थर कंपा डाला।

और अभी सूर्य पूरी तरह स्वयं को संतुलित भी ना कर पाये थे कि...

...गूंज उठी उनके अस्तित्व को थर्रा देने वाली एक और चेतावनी--

सावधान सूर्य, मैं प्रचण्डास्त्र धारक महारावण तुम्हें चेतावनी देता हूं कि हमारे भाई हिमराज के शरीर पर तुम्हारे ताप की जरा भी आंच आई तो मेरे क्रोध के भाजन बनोगे तुम।

महारावण की इस चेतावनी के साथ ही बुरी तरह विचलित नजर आने लगे सूर्य देव!

इन्द्र से न छिपी रही सूर्य की वह स्थिति-

एक तरफ तुम्हें निगल जाने को तत्पर वीर हनुमान हैं और दूसरी तरफ तुम्हारे अस्तित्व को मिटाने को तैयार महारावण हैं...

...किसके कोप का भाजन बनना चाहोगे मित्र?

अपने ताप से अपनी तरफ बढ़ते मनुष्यता के रक्षक भोकाल को पिघलाकर वीर हनुमान का...

...या फिर अपनी भीषण गर्मी से दुष्ट राक्षस हिमराज को पिघलाकर महारावण का।

दोनों तेजी से तुम्हारी तरफ बढ़ते आ रहे हैं मित्र! अतिशीघ्र निर्णय करो अन्यथा तुम्हारा ताप दोनों को ही नष्ट कर डालेगा!

विचित्र परिस्थिति में कंसे सूर्यदेव का चेहरा अचानक कठोर होता चला गया।

और यह इस बात का द्योतक था कि सूर्यदेव अपना निर्णय ले चुके थे-

इसी के साथ भोकाल और हिमराज के कंठों से निकली दर्दनाक चीखों से मानों सारा आकाश गूंज उठा-

आहह...

अहहह...

अब दोनों में से एक का समाप्त होना निश्चित था लेकिन प्रश्न येथा कि समाप्त होगा कौन... भोकाल या...

...हिमराज -

आपका भक्त एकदम सकुशल है वीर हनुमान। मैं महारावण के कोप का भोजन बनने के लिए तैयार हूं। मानवता और देवता के हितों के लिए जब भोकाल जैसा मनुष्य अपना अस्तित्व दावं पर लगाये हुए है तो भला मैं देव होकर पीछे क्यों रहूं।

धन्य है आपका यह भक्त।

बेहोश भोकाल को हनुमान की बांहों में रखकर सूर्यदेव ने अपने रथ को आकाश की ओर दौड़ा दिया।

समाप्त-